38.1

# द्वितीय अध्याय

## फीचर : स्वरूपगत अध्ययन

द्वितीय अध्याय

# फीचर : स्वरूपगत अध्ययन

## २.१ फीचर क्या है?

फीचर आधुनिक पत्रकारिता की नवीनतम विधा है। "फीचर' (Feature) शब्द लैटिन के 'Factra' से उत्पन्न हुआ है।"[१] जिसका अर्थ है आँख, नाक, मुँह, आकृति या रूपरेखा इत्यादि। इसे हिंदी में कुछ विद्वानों ने 'रूपक' कहा हैं । यह शब्द काव्यशास्त्र के अलंकार दृश्य, काव्य और नाटक के अर्थ में रूढ़ हो चुका है परंतु आज इस विधा के लिए 'फीचर' यही शब्द अधिक व्यवहृत होता जा रहा है । जैसे रेडियो फीचर, फोटो फीचर, टेलीविजन फीचर इत्यादि ।

मीडिया के क्षेत्र में फीचर से तात्पर्य है, समाचारपत्रों में प्रकाशित विशिष्ट आलेख तथा आकाशवाणी एवं टेलीविजन से प्रसारित ऐसे विशिष्ट कार्यक्रमों से हैं जो हमें केवल जानकारी ही नहीं देते बल्कि हमारे मन को मोहित एवं प्रभावित कर मनोरंजक पद्धति से ज्ञानवर्द्धन भी करते हैं । श्री डेनियल आर. विलियम्स ने अपने ग्रंथ 'फीचर राइटिंग फार न्यूज पेपर्स' में लिखा है "फीचर ऐसा रचनात्मक तथा कुछ-कुछ स्वानुभूतिमूलक लेख है जिसका गठन किसी घटना, स्थिति अथवा जीवन के किसी पक्ष के संबंध में पाठक का मूलत: मनोरंजन करने एवं सूचना देने के उद्देश्य से किया गया है ।"[२]

हमारे परिवेश में क्या घट रहा है इसे जानने की जिज्ञासा मनुष्य में हमेशा रहती है । इस जिज्ञासापूर्ति के लिए वह समाचारों को पढ़ता है, सुनता भी है । समाचारों की भाषा में कोई सौन्दर्य नहीं होता वह सीधे सपाटबयानी शैली में दिए जाते हैं । संभवत: इस शैली में दी गई जानकारी को पढ़ने या सुनने में व्यक्ति नीरसता दिखा सकता है । लेकिन फीचर सौन्दर्य से परिपूर्ण, कल्पक एवं रोचक शैली में दिए जाने के कारण व्यक्ति अनायास ही इसकी ओर आकर्षित हो जाता हैं । फीचर का आधार समाचार है, लेकिन फीचर समाचार नहीं है । फीचर लेखक अपनी कल्पनाशक्ति और लेखन कौशल के बल पर समाचारों में निहित तथ्यों को कथात्मक रूप में प्रस्तुत करता है जिससे पाठक या श्रोता प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता ।

"किसी समसामयिक घटना, स्थिति, वस्तु एवं परिवेश के प्रति पाठकों की रुचि बढ़ाकर उनमें उत्सुकता की वृद्धि कर देना फीचर लेखन की मुख्य विशेषता होती है ।"[३] किसी घटना का मनोरम एवं विशुद्ध प्रस्तुतीकरण फीचर है । तथ्यों की प्रस्तुति के अतिरिक्त फीचर घटना या वस्तु-परिवेश के सम्बन्ध में उन सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं से हमारा परिचय कराता हैं, या उन गूढ़ तथ्यों को प्रकाशित करता हैं, जिनकी ओर सामान्य पाठक का ध्यान नहीं जा पाता ।

फीचर लिखते समय लेखक अपने ज्ञान का प्रदर्शन न करते हुए पाठकों के बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर फीचर लिखता है । वह अपने फीचर के लिए कुछ ऐसे विचार बिंदुओं, शब्दों व मानव जीवन के मार्मिक प्रसंगों का चयन करता हैं जिसे पढ़कर पाठक तरोताजा हो जाए। फीचर लिखने के लिए लेखक को अपना दिल और दिमाग दोनों का इस्तेमाल करना पड़ता हैं । फीचर लेखक अपने उद्देश्य के प्रति हमेशा सजग रहता है । "वह अपने दायित्त्व का निर्वाह करते हुए अपने व्यक्तित्त्व को लेखन पर हावी नहीं होने देता, फीचर में ही अपने व्यक्तित्त्व को छिपाकर अपना दु:ख, संवेदना, करुणा, दया आदि समाहित करके अपना कार्य प्रतिपादित करता है ।"[४] वास्तव में फीचर का मूल उद्देश्य किसी भी घटना या विषय के तथ्यों व सत्यों को पाठक को समझाना होता है । परंतु फीचर में इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है कि लेखन कहीं भी बोझिल न होने पाए और रोचकता सदैव बनी रहे ।

मीडिया के क्षेत्र में फीचर विधा दिन-ब-दिन अत्यंत लोकप्रिय हो रही है । पाठकों को मोहित एवं प्रभावित करने वाली यह विधा अब प्रिंट मीडिया तक ही सीमित नहीं है । रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट पर भी इसने धूम मचायी है । फीचर लेखन में रुचि लेने वालों की संख्या भी बढ़ रही हैं, चूँकि फीचर लेखन में लेखकों को आर्थिक लाभ के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा भी मिलती हैं ।

फीचर के माध्यम से व्यक्ति को अतीत, वर्तमान एवं भविष्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण, संक्षिप्त एवं सिलसिलेवार जानकारी प्राप्त होती है । इस संदर्भ में डॉ. संजीव भानावत अपनी पुस्तक 'समाचार लेखन के सिद्धांत और तकनीक' में लिखते हैं "फीचर वस्तुत: भावनाओं का सरस, मधुर और अनुभूतिपूर्ण वर्णन है । फीचर लेखक गौण है । वह एक माध्यम है जो फीचर द्वारा पाठकों की जिज्ञासा, उत्सुकता और उत्कंठा को शांत करता हुआ समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों का आकलन करता है। इस प्रकार फीचर में सामयिक तथ्यों का यथेच्छ समावेश तो होता ही हैं, साथ ही वह अतीत की घटनाओं तथा भविष्य की संभावनाओं से भी जुड़ा रहता है । समय की धड़कने इसमें गुंजती हैं ।"[५]

संक्षेप में फीचर के स्वरूप के संबंध में कहा जाता है कि फीचर किसी घटना, विषय, वस्तु, व्यक्ति या स्थान के बारे में लिखा गया ऐसा विशिष्ट आलेख है जो कल्पनाशीलता और सृजनात्मक कौशल के साथ मनोरंजक और आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया जाता है । इसके लिए विषय की कोई सीमा नहीं है । दृश्य-अदृश्य जगत् के किसी भी ईकाई पर फीचर लिखा जा सकता है । सरल भाषा और आकर्षक शैली में लिखे गए फीचर पाठक अथवा श्रोताओं को हमेशा आकर्षित करते हैं ।

**२.२ फीचर की परिभाषा :**

फीचर मीडिया जगत् की नवीनतम विधा है । "फीचर शब्द अंग्रेजी भाषा से गृहित है, जिसका अर्थ है 'आकृति', 'नख-शिख', 'रूपरेखा', 'लक्षण', 'विशेषता' और 'व्यक्तित्त्व ।"[६] लेकिन इससे समाचार जगत् में प्रयुक्त 'फीचर' शब्द का अर्थ पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं होता । फीचर की कोई एक निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती । उसमें निहित गुणों एवं विशेषताओं के आधार पर पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने फीचर के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं जिनका विवेचन निम्नांकित है -

**• जे. जे. सिडलर :**

"कोई भी घटना जिसमें मनुष्यों की अभिरुचि हो, समाचार है, लेकिन समाचार से हटकर या समाचार रहित होकर वह जब कथात्मक रूप में अपने पाठकों का मनोरंजन करती है तो वह फीचर है ।"[७]

**• बिलार्ड ब्लेयर :**

"फीचर में तथ्यों को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता हैं । इसका मुख्य उद्देश्य होता है सामान्य पाठक का मनोरंजन करना अथवा उसकी जानकारी बढ़ाना ।"[८]

**• एल्मो स्कॉट वाटसन :**

"फीचर किसी भावना के इर्द-गिर्द चक्कर काटता है। समाचार को ऐसा रूप दिया जाता है कि वह और आकर्षक बने, पाठक का ध्यान खींचे और सामान्य पाठक की भावनाओं को छू जाए ।"[९]

**• जॉर्ज ए हग :**

"फीचर में सामान्यत: उसी प्रकार स्थितियों का विश्लेषण होता है, जिनका हम नित्यप्रति अनुभव करते हैं और जो किसी के भी जीवन में घटती या घट सकती हैं । उनके अनुसार फीचर

यह याद दिलाता है कि हम सब समान अनुभव के भागीदार हैं ।''[१०]

**• ब्रिसेन निकोल्स :**

"फीचर की कुंजी मनोभाव हैं । फीचर में क्रोध का प्रदर्शन, दया, हास्य-व्यंग्य का भाव प्रकट हो सकता हैं । इसमें घृणा भी प्रदर्शित हो सकती है । फीचर में कुछ न कुछ प्रकट होना चाहिए क्योंकि फीचर का बाकापन उसमें निहित भावुकता और टीका में है ।''[११]

**• विलियम एम. रिवर्स :**

"फीचर का जाल समाचार से बड़ा होता है। फीचर लेखक पठनीय अनुभव प्रस्तुत करता है। उसमें सूचना को महत्त्व नहीं दिया जाता, जितना शैली लालित्य और विनोद को ।''[१२]

**• मधुकर गंगाधर :**

"फीचर लेख से छोटा, गद्यकाव्य में लिखी गई ऐसी रचना होती है, जिसमें भाषा के चुटीलेपन तथा विषय की विशिष्टता के कारण ऐसी सामग्री पाठक को मिल पाती है जिसे पढ़कर पाठक का ज्ञानवर्द्धन और मनोरंजन होता है ।''[१३]

**• रत्नेश्वर :**

"फीचर वह निबंध रचना है जिसमें लेखक किसी भी समयानुकूल विषय पर मर्यादित आकार में विनोदपूर्ण एवं संगीतमय वाणी प्रदान कर अपने विचार प्रस्तुत करता हैं ।''[१४]

**• डॉ. पृथ्वीपाल सिंह :**

"किसी रोचक विषय का मनोरंजक शैली में विस्तृत विवेचन ही फीचर है ।''[१५]

**• डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ :**

"फीचर एक ऐसा आलेख है जो समाचार के परिपार्श्व में समाचार रहित, भावनायुक्त , सम्मोहक, वैचारिक क्षितिज का मनोरंजनपरक संस्पर्श लिए हुए सरस एवं संक्षिप्त अभिव्यक्ति से संपन्न होता है ।''[१६]

**• विश्वनाथ सिंह :**

"फीचर लेखक पाठक को स्वस्थ तथा गंभीर मनोरंजन देता है । इसका प्रभाव क्षणिक या अस्थायी नहीं होता । यह पाठक के मन तथा विचारों को एक झटका देता है, उसे एक विशेष ढंग से सोचने-विचारने का अवसर प्रदान करता है ।''[१७]

• **श्री. खाडिलकर:**

"फीचर वे लेख हैं, जो पाठकों को यह बताते हैं कि वह घटना क्यों घटी तथा उसका परिणाम क्या होगा ।"[१८]

उपरोक्त फीचर संबंधी विभिन्न विद्वानों के विचारों के आधार पर फीचर को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि फीचर किसी भी समाचारपत्र-पत्रिका, रेडियो तथा टेलीविजन पर प्रसारित समसामयिक, ऐतिहासिक व ज्वलंत समस्या से परिपूर्ण वह नवीन समाचार हैं जो अत्यंत रमणीय और मनोरंजक ढंग से थोड़े शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है ।

**२.३ फीचर के विविध अंग :**

फीचर चाहे वह समाचारपत्र-पत्रिका में छपा हुआ हो या आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा इंटरनेट से प्रसारित होता हो । इन सभी माध्यमों के लिए लिखित फीचर में कुछ बातें समान होती हैं; जिन्हें फीचर के आवश्यक अंग माना जाता हैं। सामान्यत: किसी भी फीचर के तीन भाग किए जाते हैं जिन्हें हम उसके आवश्यक अंग कहते हैं । ये आवश्यक अंग हैं प्रस्तावना या भूमिका (इण्ट्रो), मुख्य कलेवर और उपसंहार । इन तीन अंगों के साथ-साथ फीचर में शीर्षक का भी अपना विशेष महत्त्व होता है । यहाँ पर फीचर के विविध अंगों का विस्तृत विवेचन दिया जा रहा हैं-

**२.३.१ शीर्षक :**

फीचर लेखन में शीर्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है । वस्तुत: शीर्षक थोड़े शब्दों का समुच्चय हैं जिसमें संपूर्ण फीचर का मूल कथ्य या भाव हमारे सामने प्रकट हो जाता है । फीचर में क्या है? वह किस विषय की ओर संकेत करता है? और फीचर लेखक का विचार क्या है? यह शीर्षक से ही पता चलता है ।

एक अच्छा शीर्षक फीचर के सौन्दर्य को ही नहीं बढ़ाता बल्कि उसके प्रभाव को भी बढ़ाता है । शीर्षक के संबंध में इंद्र विद्यावाचस्पति ने कहा है "शीर्षक का प्रारंभ तो केवल लेख का विषय सूचित करने के लिए हुआ था, परंतु धीरे-धीरे वे पाठकों का ध्यान आकृष्ट करने, रुचि बढ़ाने और सम्मति द्वारा परोक्ष रूप से लोकमत को प्रभावित करने के काम में आने लगे हैं । अब तो शीर्षक बनाना स्वयं एक हुनर बन गया है ।"[१९]

फीचर के शीर्षक में प्रमुखत: तीन उद्देश्य निहित होते हैं-

१) फीचर के कथ्य को उजागर करना ।

२) फीचर का सार प्रस्तुत करना ।

३) पाठक की इच्छाशक्ति जागृत करना ।

इन तीनों उद्देश्यों की पूर्ति करने वाला शीर्षक अपने आप में पूर्ण होता है । "प्राय: सरल, संक्षिप्त, नाटकीय, गद्यात्मक, काव्यात्मक, आश्चर्यबोधक, सनसनीखेज, तुलनात्मक, उक्तिप्रधान, अनुप्रासी, प्रश्नसूचक शीर्षक फीचर का आकर्षण बढ़ा देते हैं ।"[२०] सामान्य शीर्षक फीचर को प्रभावहीन बना देते हैं । अत: कहा जा सकता है कि चाहे किसी भी माध्यम के लिए लिखे गए फीचर का शीर्षक ऐसा होना चाहिए जो संपूर्ण फीचर का मूलभाव प्रकट कर सके । आकर्षक, नवीन, अपने आप में पूर्ण और कौतुहलवद्धर्क शीर्षक पाठक अथवा श्रोता को अपनी ओर खींच लेता है ।

**२.३.२ इंट्रो अथवा आमुख :**

फीचर का आरंभ उसका प्राण तत्त्व कहलाता है । अंग्रेजी में इसे 'इण्ट्रोडक्शन' और संक्षेप में 'इंट्रो' कहा जाता है । फीचर के आरंभ में ही कम से कम वाक्यों में रोचक ढंग से फीचर का परिचय दिया जाता है । "इंट्रो में फीचर की कथावस्तु के सार को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि फीचर में निहित समाचार से संबंधित छह 'क'कारों का उत्तर उसमें समाविष्ट हो जाता है ।"[२१] फीचर की शुरूवात ही आकर्षक ढंग से की जाए तो पाठक को भी संपूर्ण फीचर पढ़ने या सुनने का मोह हो जाता है । इंट्रो की नाटकीयता, मनोरंजकता, भावनात्मकता अथवा अलंकारिकता अनायास ही फीचर में सजीवता का संचार कर देती है । पाठक की जिज्ञासावृत्ति को जागृत करने वाले, प्रथम पंक्ति में ही पाठकों को आकृष्ट करने वाले तथा फीचर के मूल उद्देश्यों को स्पष्ट करने वाले 'इंट्रो' ही श्रेष्ठ तथा स्तरीय माने जाते हैं ।

फीचर लेखन में विषय की विविधता होती हैं इसलिए फीचर लेखक भी अपनी कल्पनाशक्ति एवं शैली के आधार पर फीचर के इंट्रो में भी विषयानुकूल विभिन्नता का प्रयोग करता हैं । इसमें तथ्य का निष्कर्षणात्मक और महत्त्वपूर्ण अंश पाठक की संतुष्टि के लिए प्रभावशाली रूप में आना आवश्यक है । "इंट्रो' या 'आमुख' के कई प्रकार होते हैं जैसे सारयुक्त आमुख, विशिष्ट घटनात्मक आमुख, दृष्टान्वित आमुख, लघुवाक्य आमुख, प्रश्नात्मक आमुख, प्रत्यक्ष भावान्वित आमुख, विरोधात्मक आमुख, सादृश्यमूलक आमुख, चित्रात्मक आमुख, नाट्यात्मक आमुख आदि ।"[२२] फीचर के इंट्रो बनाने के लिए विविध प्रकार हैं । अत: फीचर के इंट्रो के संदर्भ में कहा जा सकता है कि फीचर का आरंभ अपने आप में पूर्ण, संतुलित, मूल विषय से जुड़ा हुआ हो तथा फीचर के किसी मार्मिक पक्ष का प्रतिपादक हो । असंतुलित और असंबद्ध

आरंभ महत्त्वहीन होता है ।

**२.३.३ मध्य :**

फीचर के आरंभ में विषय संकेत और महत्त्व को सार रूप में देने के बाद विषय का संपूर्ण विकास फीचर के मध्य में होता है । फीचर के रोचक एवं आकर्षक आरंभ को पढ़ने के बाद पाठक फीचर की मूलसंवेदना या मूलभावना की गहराई में उतरने के लिए प्रोत्साहित हो जाता है । फीचर लेखक पाठकों को वैचारिक धरातल पर संतुष्ट करने के लिए फीचर के विवेचन, विश्लेषण या मध्य में अपने विचार या ज्ञानसामग्री को विभिन्न परिच्छेदों में लययुक्त क्रमबद्धता की अनुरूपता में बताता है । इससे पाठक विषय में डूबने लगता है और विषय विश्लेषण से लाभान्वित होकर फीचर की आत्मा तक पहुँचता है ।

फीचर के मध्य में रखी जाने वाली सामग्री के सन्दर्भ में भी लेखक को ध्यान रखना पड़ता है । "सामान्यत: विषय को अधिक पुष्ट एवं प्रामाणिक बनाने वाले तथ्यों एवं विचारों का ही मध्य में आकलन, संकलन व ग्रंथन होना चाहिए । असंबद्ध एवं विषयांतर प्रसंगों के समावेश से फीचर पाठकों की दृष्टि की पकड़ खो देता है ।"[२३] अत: कहा जा सकता है कि फीचर के 'इंट्रो' में जो विचार उठाए गए थे उन्हीं विचारों के इर्द-गिर्द रहकर मूल कथ्य का विकास फीचर के मध्य में होता है।

**२.३.४ निष्कर्ष अथवा उपसंहार :**

फीचर का अंतीम भाग उपसंहार अथवा निष्कर्ष कहलाता है । इस भाग में फीचर लेखक किसी निष्कर्ष पर पहुँचता हुआ अपनी बात संक्षिप्त में कह देता है तथा पाठक की समस्त जिज्ञासाओं का समाधान करने का प्रयास करता है। यह आवश्यक है कि फीचर का निष्कर्ष समसामयिक और प्रभावी हो । फीचर के निष्कर्ष में लेखक पाठकों के लिए नए विचार सूत्र दे सकता हैं, सुझाव दे सकता हैं, कोई प्रश्न छोड़ सकता है जो पाठकों को सोचने के लिए बाध्य करें तथा कुछ ऐसे प्रश्न छोड़ सकता हैं जिनके उत्तर पाठक तलाशे । प्रस्तुति का ढंग और वाक्य-विन्यास शैली यहाँ विशेष महत्त्व रखती हैं । अत: कहा जा सकता है कि जिस प्रकार फीचर का आरंभ सशक्त ढंग से किया जाता है उसी प्रकार उसका समापन या उपसंहार उतना ही सशक्त रूप में होना चाहिए ।

**२.३.५ भाषा शैली :**

भाषा शैली फीचर का एक महत्त्वपूर्ण अंग है । फीचर लेखन के लिए जितना विषय चयन

का महत्त्व होता है उतना ही उस विषय को न्याय देने के लिए गंभीरता एवं निष्ठा के साथ अभिव्यक्ति हो इसकी ओर ध्यान दिया जाता है । फीचर में विषय के अनुकूल शब्दों का चयन अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है । कोई भी विषय भाषा की ताकत से ही जीवंत बन पाता है । दृष्टांत देते हुए धाराप्रवाह शैली में फीचर लेखक अपनी बात को इस रूप में प्रस्तुत करता है कि पाठक के अंत:स्थल तक वह उतर जाती है । "भाषा और शैली मूल कथ्य को आकार देती है तथा फीचर की बनावट को पहले चरण से अंतीम चरण तक की यात्रा पूरी कराती है ।"[२४] इसलिए फीचर में भाषा शैली का महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

उपरोक्त विभिन्न तत्त्वों को मिलकर ही फीचर एक सर्वोत्कृष्ट रूप लेता है । इनमें से किसी एक तत्त्व का अभाव फीचर को विकृत बना सकता है । इसलिए विभिन्न तत्त्वों का समन्वित रूप फीचर के सौन्दर्य में वृद्धि कर उसे पठनीय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

## २.४ फीचर के गुण व लक्षण :

फीचर केवल समाचार या लेख नहीं होता । वह पाठक अथवा श्रोता एवं दर्शकों को समसामयिक घटना, स्थिति, वस्तु एवं परिवेश के प्रति रुचि बढ़ाकर उसमें उत्सुकता व जिज्ञासा की वृद्धि करके उन्हें घटना के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराते हैं । फीचर तथ्यों को यथातथ्य रूप में नहीं रखता । वह समाचार के पीछे के समाचार का रहस्योद्घाटन करता है, जिनकी ओर सामान्य पाठक का ध्यान नहीं जा पाता । "अन्वेषण तथा विश्वसनीय साक्ष्यों से अपने कथ्य को पुष्ट करती यह विधा घटनाओं द्वारा जनता पर होने वाले प्रभाव का पूर्वानुमान भी करती है ; तो संभावित परिणामों की ओर भी ध्यानाकर्षित करती चलती है ।"[२५] इन्हीं सब उपलब्धियों से पाठक की भावनात्मक संतुष्टि होती है और वह आकर्षित तथा प्रभावित भी होता है । तथ्यों का रोचक पद्धति से विश्लेषण, भावों और कल्पना का संमिश्रण, तर्कसंगतता तथा सहजता आदि का कौशलपूर्ण निर्वाह कर एक अच्छा फीचर तैयार किया जाता है। इसके अतिरिक्त एक उत्कृष्ट फीचर के गुण एवं लक्षण इस प्रकार हैं-

### २.४.१ गंभीरता एवं रोचकता :

फीचर पत्रकारिता का एक अत्यंत उद्देश्यपूर्ण अंग है । फीचर के माध्यम से जनसामान्य के सम्मुख एक गंभीर विषय का विश्लेषण करते हुए उसके अच्छे बुरे पक्षों को तटस्थता से प्रस्तुत किया जाता हैं । इसलिए फीचर लेखन जितना रोचक होना चाहिए उससे अधिक गंभीर भी होना चाहिए । गंभीरता से तात्पर्य यहाँ बोझिल होने से नहीं है । अगर वह गंभीरता के प्रयास में बोझिल बना दिया गया तो उद्देश्य की हत्या होगी । रोचकता फीचर को जीवंत रखने वाली महत्त्वपूर्ण

विशेषता है । वास्तव में फीचर का वैशिष्ट्य ही है -गंभीरता और रोचकता का एक साथ अद्‌भूत निर्वाह । "गंभीरता उसे प्राणवान बनाती है तो रोचकता उसे जीवंत ।"[२६]

**२.४.२ संक्षिप्तता :**

संक्षिप्तता फीचर का प्राणतत्त्व है । फीचर अगर बहुत लंबा या बड़ा होगा तो वह पाठक अथवा श्रोता में नीरसता उत्पन्न कर सकता है । वैसे तो फीचर का आकार निश्चित नहीं होता फिर भी "आदर्श फीचर की लंबाई अधिक से अधिक पाँच-छह सौ शब्दों की मानी गई हैं ।"[२७] 'गागर में सागर' भरते हुए फीचर को सहज एवं सरल ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए । फीचर लेखक और पाठक के भाव प्रवाह में अखंडता एवं तारतम्यता बनी रहे तथा पाठक उसे पूर्ण किए बिना न छोड़े यही उसकी सफलता का प्रमाण है ।

**२.४.३ उद्‌देश्यपूर्णता :**

प्रत्येक सृजन का कोई न कोई प्रयोजन होता है । फीचर भी विशिष्ट उद्‌देश्य को सामने रखकर ही लिखे जाते हैं । फीचर लेखक पाठकों पर समाचार थोंपता नहीं अपितु वह उन सभी समसामयिक घटनाओं का विवेचन मनोरंजक पद्‌धति से करता है, जो समाज कल्याण एवं जनहित से जुड़ी हो । इसलिए पाठकों एवं दशकों के लिए एक उद्‌देश्यपूर्ण फीचर अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथा मूल्यवान होता है, चूँकि फीचर में समाज को एक नई दिशा अथवा नये विचार देने की क्षमता होती है । अत: उद्‌देश्यपूर्ण फीचर ही सर्वोत्कृष्ट फीचर कहलाता है ।

**२.४.४ मानवी संवेदना एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति :**

भावनात्मक संस्पर्श फीचर लेखन की अनिवार्यता है । पाठक केवल समाचार अथवा जानकारी से उतना प्रभावित नहीं होता, जितना मानवीय भाव-भावनाओं एवं संवेदनाओं की अभिव्यक्ति से होता है । किसी भी अच्छे फीचर को पढ़ने के बाद पाठक को किसी-न-किसी तरह का संतोष प्राप्त होता है जो मनोरंजन, जानकारी अथवा शिक्षा के रूप में हो सकता है । संभवत: इन बातों को ही दृष्टिपथ में रखकर श्री. रामचंद्र तिवारी ने कहा है कि "फीचर लेखक अपने आँख, कान, भावों, अनुभूतियों, मनोवेगों और अन्वेषणों का सहारा लेकर उसे रुचिकर, आकर्षक और हृदयग्राही बनाता हैं । वास्तव में सच तो यह है कि मानवीय भावना के बिना कोई भी लेखन पाठक की संवेदना को जागृत नहीं कर सकता, न लोकप्रियता प्राप्त कर सकता है, और न वह साहित्य की श्रेणी में आता है ।"[२८] अत: फीचर की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमे अंतर्निहित सत्य, मानवीय संवदेना और घटनाओं के पीछे सक्रिय कारणों का विश्लेषण कितनी जीवन्तता के साथ किया गया है ।

### २.४.५ जिज्ञासा जागृत करना :

सर्वोत्कृष्ट फीचर वही कहलाता है जिसे पढ़कर पाठक के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हो । अर्थात् फीचर को पढ़ते हुए उसकी प्यास भी कुछ न कुछ जानने के लिए बढ़ती रहनी चाहिए और साथ ही वह बुझती भी रहनी चाहिए । पाठक जब भी कोई फीचर पढ़ता है, तो उसके दिमाग में अलग-अलग प्रश्न उपस्थित होते हैं, जिनके उत्तर वह जानना चाहता है । अत: कहा जा सकता है कि अच्छा फीचर वही है, जिसे पढ़ते समय पाठकों के मन में प्रश्न भी उत्पन्न हो और आगे पढ़ते समय उसका जवाब भी उसे मिल जाए ।

### २.४.६ कल्पनात्मकता :

फीचर का मुख्य उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन करना और कुछ नया अनुभव प्रदान करना होता है । इसलिए लेखक अपने भावों, अनुभवों आदि के आधार पर विभिन्न तरह से कल्पना करके विवेचित विषय को पाठकों तक पहुँचाता है । फीचर में कल्पना का अंश अवश्य होता हो, लेकिन वह कल्पना निराधार नहीं होनी चाहिए।

एक अमेरिकी पत्रकार के अनुसार- "फीचर में चाहे कल्पना की उड़ान भरी जाती हो, पर उस कल्पना में भी एक ऐसी अनोखी सच्चाई होती है, जो छिपी होती है और लेखक अपनी विशिष्ट शैली के माध्यम से उसे हमारे सामने लाता है ।"[२९] अत: कहा जा सकता है कि कल्पना का समुचित प्रयोग फीचर के प्रभाव को बढ़ाता है ।

### २.४.७ मौलिकता :

फीचर लेखन में मौलिकता का विशेष स्थान है । यह मौलिकता विषय संबंधी तथ्यों की खोज-बीन, जाँच-पड़ताल तथा परख विश्लेषण से लेकर उसकी प्रस्तुति तक विद्यमान रहती है । लेखक का अंदाज उसके दृष्टिकोण एवं अभिव्यक्ति को रेखांकित करके उसे भीड़ से अलग कर देता है । विवेच्य बिंदु को अपनी एक खास शैली में ढ़ालकर विवेचित करना तथा पूर्वप्रचलित धारणाओं की नए-नए तथ्यों एवं जानकारियों के परिप्रेक्ष्य में परीक्षा करना फीचर लेखक की मौलिकता का परिचायक बनता है । मौलिकता के अभाव में फीचर को पल्लव विहिन वृक्ष ही समझा जा सकता है ।

### २.४.८ सत्यता एवं विश्वसनीयता :

सत्य की अभिव्यक्ति ही फीचर का लक्ष्य होता है । प्रामाणिकता, विश्वसनीयता एवं दायित्त्वपूर्ण गंभीरता में फीचर के प्राणतत्त्व होते हैं । सभी प्रकार की प्रामाणिक जानकारियों, संदर्भों

एवं तथ्यों को फीचर में इस रूप में प्रस्तुत करना चाहिए कि उनकी यथार्थता पर कहीं भी संदेह के लिए स्थान न हो ।

फीचर में प्रस्तुत सत्य एवं तथ्य ऐसा होना चाहिए जो पाठकों के मानसिक स्तर के अनुरूप हो, समसामयिक हो, उसकी तर्क-वितर्क क्षमता की परिधि के अंतर्गत आता हो । ऐसा फीचर कभी भी लोकप्रिय नहीं हो सकता जो पाठक की समझ से परे हो, उसमें कल्पना की असीमित उड़ान हो, जो सत्य से बहुत दूर हो । इस संदर्भ में मधुकर गंगाधर कहते हैं कि "फीचर तथ्याश्रित होता है । फीचर या आलेख रूपक की तथ्यपरकता श्रोता के तर्कों को बाँधती हैं और लेखक कथातत्त्व का प्रयोग जितनी चालाकी, चुस्ती और कलापूर्ण ढंग से करता है, फीचर वस्तुतः उतना ही श्रेष्ठ होता है ।"[३०] अत: कहा जा सकता है कि आधारहीन बात पाठक के मन में विश्वास उत्पन्न नहीं कर सकती । लेखक जब आत्मविश्वास के साथ विश्वास की शैली में फीचर लिखेगा तो निश्चित रूप से पाठक के मन में वह विश्वास उत्पन्न करेगा ।

**२.४.९ शीर्षक की सटीकता :**

सटीक शीर्षक फीचर को अधिक रुचिकर एवं आकर्षक बनाता है । शीर्षक ऐसा होना चाहिए, जिसे पढ़ते ही पाठक के भीतर उसे तत्काल पढ़ने और पूरे घटना विवरण को जानने की उत्कट इच्छा होनी चाहिए । शीर्षक फीचर का प्रतिबिंब होता है । इसलिए वह अत्यंत सटीक, उपयुक्त , सारगर्भित एवं संक्षिप्त होना चाहिए । पूरे संदर्भ के केंद्रीय भाव को हृदयंगम करने वाला शीर्षक फीचर में चार-चाँद लगा देता है । फीचर का शीर्षक विषयानुरूप व्यंग्यात्मक, सारात्मक, परिचयात्मक अथवा भावात्मक भी हो सकता है । अत: फीचर लेखन में शीर्षक का महत्त्व शीर्षस्थ होता है ।

**२.४.१० भाषा शैली :**

फीचर का लक्ष्य होता है कथ्य को रुचिकर ढंग से पल्लवित करते हुए पाठक को आनंदित करना और उसका ज्ञानवर्द्धन करना । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए फीचर की भाषा सरल, सहज और बोधगम्य होना आवश्यक है । फीचर में विषयानुरूप भाषा एवं यथाप्रसंग लोकोक्तियाँ, मुहावरों का प्रयोग संयुक्तिक माना जाता है । इसी प्रकार उन्मुक्त एवं सादगीपूर्ण शैली के प्रयोग से फीचर और भी अधिक प्रभावकारी बनता है ।

फीचर में प्रयुक्त वाक्य छोटे और सुगठित होने चाहिए । कठिन वाक्य रचना एवं बड़े-बड़े भारी शब्दों के बजाए सीधे एवं नाटकीय ढंग से की गई फीचर की संरचना अधिक प्रभावपूर्ण हो सकती है । अत: कहा जा सकता है कि विषय प्रस्तुति के लिए अपनायी गई भाषा एवं शैली

से ही फीचर लेखक की बौद्धिक क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल का भी ज्ञान होता है ।

### ३.४.११ लेखन कला :

लेखन कला में निपुण होना फीचर लेखक की प्रथम अनिर्वायता है क्योंकि अन्य सभी तत्त्वों में यह तत्त्व सर्वोपरि है । फीचर लेखक को फीचर लेखन करते समय अपने व्यक्तिगत तर्क-वितर्क से उपर उठकर पाठक की अभिरुचि के अनुसार विषयवस्तु का चयन करके, आकर्षक एवं मनोरंजनपूर्ण शैली में फीचर का सृजन करना होता है । कहने का आशय यह है कि फीचर लेखन में सरल, सहज, संक्षिप्त, रोचक शब्दावली का प्रयोग प्रभावपूर्ण ढंग से करना चाहिए । इस संदर्भ में डॉ. पी. डी. टंडण लिखते हैं "फीचर लिखने के लिए दिल व दिमाग दोनों का इस्तेमाल करना होता हैं । अच्छा आरंभ और खूबसूरत अंत पर ही फीचर की कामयाबी निर्भर होती है । लोग उसी बात को पसंद करते हैं जो थोड़े शब्दों में खूबसूरती से कही गयी हो ।"[३१]

फीचर का महत्त्व तब और बढ़ जाता है जब इसमें संबंधित व्यक्ति या सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के कथन, लोक कहावतें, मुहावरें, सुभाषितों आदि का प्रयोग किया जाता हैं । अत: कहा जा सकता है कि सर्वोत्कृष्ट फीचर लेखन के लिए लेखक के पास केवल ज्ञान भंडार होना काफी नहीं है, उसके साथ-साथ फीचर लेखन की तकनीक अथवा कला का ज्ञान होना भी आवश्यक है । अत: कहा जा सकता है कि एक उत्कृष्ट फीचर सृजन के लिए उपर्युक्त सभी तत्त्वों का यथोचित समन्वय होना अनिवार्य हैं । वही फीचर पाठक को सर्वाधिक प्रभावित कर सकता है जो सर्वगुण संपन्न हो और इसी पर उसकी लोकप्रियता निर्भर होती है ।

## २.५ फीचर का उद्देश्य :

आधुनिक मीडिया जगत् में पत्रकारिता का दायरा बहुत बढ़ गया है । स्वतंत्रतापूर्वकाल में भारत में पत्र-पत्रिकाओं का आरंभ जनचेतना के उद्देश्य से हुआ था । तब केवल 'स्वाधीनता' ही हमारा लक्ष्य था । इसके लिए सामान्य व्यक्ति से लेकर नेता, क्रांतिकारी, पत्रकार, साहित्यकार यह सभी अपने-अपने स्तर पर प्रयत्नशील थे। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् नये युग के अत्याधुनिक आविष्कारों ने मानव जीवन के सभी पहलुओं को स्पर्श किया हैं । पत्रकारिता के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग होने लगे । अब पत्रकारिता का कार्य केवल देशप्रेम एवं जनजागृति ही नहीं रहा, बल्कि इससे भी आगे बढ़कर आज की पत्रकारिता में दुनिया के सर्वसामान्य व्यक्ति की समस्या भी उसका विषय बनी । ऐसे ही कुछ दशकपूर्व पत्रकारिता के क्षेत्र में फीचर इस नई विधा का जन्म हुआ ।

फीचर के माध्यम से न केवल समाचारों को ही प्रसारित किया जाता हैं, बल्कि किसी भी समसामयिक घटना, विषय, वस्तु या व्यक्ति के संदर्भ में तथ्याश्रित जानकारी को रोचक एवं मनोरंजक ढंग से पाठकों तक पहुँचाया जाता हैं । फीचर के जरिए पाठक के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा उसकी जिज्ञासापूर्ति होने के साथ-साथ उसे नए विचार या नयी दिशा मिल जाती है । इसी उद्देश्य को लेकर लिखा गया फीचर सर्वोत्कृष्ट एवं सफल फीचर कहलाता है । यहाँ पर फीचर के कुछ प्रमुख उद्देश्यों का विवेचन दिया जा रहा हैं-

**२.५.१ पाठकों एवं दर्शकों का ज्ञान बढ़ाना :**

समाचारपत्र, रेडियो तथा दूरदर्शन से जो समाचार प्रसारित किए जाते हैं, उनका एकमात्र उद्देश्य पाठकों तक सूचना एवं जानकारी पहुँचाना होता हैं । तात्कालिकता समाचार की प्रमुख विशेषता होती है । घटित घटना की जानकारी यदि तुरंत नहीं दी जाती है तो कुछ समय बाद वह समाचार अथवा जानकारी बासी हो जाती है । तात्पर्य केवल इतना ही है कि समाचार लेखक के पास फीचर लेखक की भाँति समय नहीं होता । फीचर लेखक के पास पर्याप्त समय होता है । वह तथ्य एवं सत्य का अन्वेषण कर रोचक पद्धति से घटना को विवेचित करता है, जिससे पाठक, श्रोता एवं दर्शक के ज्ञान में वृद्धि होती है । डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ के शब्दों में "समाचार के छः 'क'कारों में से 'क्या' की सम्पूर्ति समाचार प्रस्तुतीकरण में ही है, लेकिन समाचार में निहित समाचार, उसके सत्य और तथ्य का प्रमाण और रोचक ढंग से नई सूचना प्रस्तुत करते जाने का अर्थ ज्ञानवर्द्धन से ही होता है । फीचर लेखन सामान्य समाचार तक पहुँचे पाठक वर्ग को समाचार की गहनता में छिपे समाचार देकर ज्ञानवृद्धि करता है ।"[३२] अतः विभिन्न विषयों पर रोचक जानकारी देकर पाठकों का ज्ञान बढ़ाना ही फीचर का उद्देश्य होता है ।

**२.५.२ विचारों को नई दिशा देना एवं मार्गदर्शन करना :**

फीचर लेखक समाचार की गहराई में उतरकर उससे संबंधित नवीन सूचनाओं, तथ्यों, पूर्ण प्राप्त जानकारियों तथा सत्य के आधार पर विवेचन व विश्लेषण करते हुए आवश्यक पहलुओं पर प्रकाश डालता है, जिससे पाठक को सोचने के लिए दिशा निर्देश प्राप्त होता है ।

फीचर लेखक फीचर में अपने विचारों या निष्कर्षों एवं सुझाव या सलाह को स्पष्ट रूप से कहकर पाठकों पर थोंपता नहीं बल्कि अनायास ही वह अपने मतों को फीचर में व्यक्त कर पाठक को मार्ग दिखाने का कार्य करता है । सरल, सहज व मनोरंजक शैली में लिखा फीचर जहाँ पाठकों के लिए ज्ञानवर्द्धक होता है, वहीं नवीन सूचनाएँ, जानकारियाँ देकर मार्गदर्शन भी करता है ।

### २.५.३ जिज्ञासा को शांत करना :

अपने आस-पास क्या घटित हो रहा है, यह जानने के लिए मनुष्य स्वभाव हमेशा उत्सुक रहता है। इसी क्रम में घटना क्यों घटी, क्या कारण रहा आदि बातें वह जानना चाहता है । फीचर इन सभी प्रश्नों के उत्तर देकर मनुष्य की जिज्ञासा को शांत करता है । फीचर मानव जीवन से संबंधित घटनाओं, स्थितियों तथा संपूर्ण जगत् में स्थित किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है ।

आरंभिक काल में फीचर सिर्फ महापुरुष, नेता, अभिनेता, ऐतिहासिक व्यक्ति , घटना स्थल, त्यौहार आदि पर ही लिखे जाते थे। परंतु आज फीचर लेखन का दायरा बहुत विस्तृत हो गया है। "डॉ. पी. डी. टंडण ने पच्चीस वर्ष पूर्व धोबी, माली, खानसामा, घरेलू नौकर, नाई इत्यादि पर फीचर लिखकर जो प्रसिद्धि पाई है, उससे यह बात साफ हो जाती है कि फीचर के लिए कोई भी विषय या क्षेत्र अनुपयुक्त नहीं है; बशर्ते वह मनुष्य की जिज्ञासाओं को शांत करने वाला हो, रुचिकर हो।"[३३] अत: कहा जा सकता है विषय चाहे जो कुछ भी हो उससे संबंधित जानकारी को लोगों तक पहुँचाकर उनकी जिज्ञासापूर्ति करना फीचर का प्रमुख उद्देश्य होता है।

### २.५.४ मनोरंजन करना :

मनुष्य को अपना जीवन सुचारु रूप से जीने के लिए कुछ बुनियादी जरूरतों की पूर्ति करनी होती हैं । उसे अपनी शारीरिक जरूरतों की पूर्ति करने के बाद, मानसिक थकान दूर करने के लिए मनोरंजन की भी आवश्यकता होती है । समाचारपत्र, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर अनेक विशिष्ट आलेख अथवा कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं जिससे पाठकों एवं दर्शकों का मन हल्का हो जाए । फीचर में भी सूचना, समाचार, हास्य-व्यंग्य के साथ-साथ मनोरंजन की भी भरमार होती है । रमणीय, मनोरंजक शैली में लिखे जाने के कारण यह पाठक के हृदय में गुदगुदी पैदा करता है। पाठकों की संख्या को संतुलित करने में, प्रसार संख्या बढ़ाने में, लोक प्रसिद्धि दिलाने में फीचर महत्त्वपूर्ण साबित होते हैं ।

अत: कहा जा सकता है कि फीचर का उद्देश्य मात्र घटना एवं व्यक्ति संबंधी जानकारी देना नहीं है । फीचर घटना के तथ्यों के साथ-साथ पाठक का ज्ञान भी बढ़ाता है । उनको उचित मार्गदर्शन भी करता है तथा उनकी जिज्ञासापूर्ति करके उनका मनोरंजन भी करता है । जो फीचर इस उद्देश्य को लेकर लिखे जाते हैं, वहीं अधिकतम रूप से लोकप्रिय होते हैं । उद्देश्य से भटके हुए फीचर बोझिल हो जाते हैं । स्वस्थ, रमणीय भावाभिव्यक्ति के कारण दिन-ब-दिन फीचर की जनप्रियता बढ़ती ही जा रही है ।

## २.६ फीचर तथा अन्य विधाएँ :

फीचर पत्रकारिता की अत्यंत लोकप्रिय विधा है । समाचारपत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविजन एवं इंटरनेट आदि माध्यमों में फीचर की लोकप्रियता दिन-ब-दिन बढ़ रही है । फीचर में साहित्य और पत्रकारिता की विभिन्न विधाएँ जैसे समाचार, लेख, कथा, निबंध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि के लक्षण कमोबेश मात्रा में दिखाई देते हैं, परंतु यह विधा इन सभी विधाओं से अलग अपना स्वतंत्र अस्तित्त्व रखती है । फीचर का स्वरूपात्मक अध्ययन करते हुए उसकी अन्य विधाओं से समानता और भिन्नता के बारे में जान लेना आवश्यक बन जाता है । अत: यहाँ पर अन्य समकालीन विधाओं के साथ फीचर की समानता अथवा अंतर का विवेचन करना उचित होगा ।

### २.६.१ समाचार और फीचर :

समाचार घटना का विवरण है; घटना स्वयं में समाचार नहीं । दूसरी तरफ फीचर का आधार समाचार है, वह फीचर समाचार नहीं । समाचार में किसी भी घटना का तथ्यात्मक रूप में सपाट बयानी वर्णन किया जाता है । फीचर में विभिन्न तथ्यों को लालित्यपूर्ण भाषा और वैयक्तिक शैली में भावात्मक संस्पर्श देकर प्रस्तुत किया जाता है। फीचर का उद्देश्य समाचारों की तरह मात्र सूचना देना ही नहीं होता बल्कि मनोरंजन और ज्ञानवृद्धि के साथ-साथ पाठकों को दिशा देने का कार्य भी वह करता है। इसी संदर्भ में विलियम एल. रिवर्स ने 'द मास मीडिया' नामक अपनी पुस्तक में विचार व्यक्त किया है कि "फीचर का जाल समाचार से बड़ा होता है। फीचर लेखक पठनीय अनुभव प्रस्तुत करता है । उसमें सूचना को उतना महत्त्व नहीं दिया जाता जितना शैली, ललित्य और विनोद को ।"[३४] समाचारपत्रों में भी समाचार की तुलना में फीचर को अधिक महत्त्व दिया जाता है ।

समाचार और फीचर में शैलीगत विभिन्नता भी होती है । जहाँ समाचार मात्र वर्णनात्मक, सूचनात्मक होते हैं वहीं फीचर में शैली की विविधता होती है । समाचार आकार में फीचर से छोटे होते हैं और वह घटना के भूत, भविष्य के संदर्भ में न कहते हुए सीधा वर्तमान पर जोर देते हैं । समाचार अल्पकालिक होते हैं, वहीं फीचर की आयु समाचारों से अधिक होती है । वह हर समय 'नये' होते हैं तथा विभिन्न संदर्भों के साथ अधिक रंगीन और सजे-धजे होते हैं ।

### २.६.२ संपादकीय और फीचर :

"संपादकीय सामाजिक घटनाओं या विशेष समाचार पर संपादक की टिप्पणी हुआ

करती है, जो समाचार पत्र की नीति को सामने रखती है इसमें समाचार से संबंधित तथ्य, समाचार की पृष्ठभूमि, समाचार का दूरगामी प्रभाव,घटनाओं के कारणों की व्याख्या, आलोचना, प्रशंसा, मार्गदर्शन, चेतावनी एवं सुझाव आदि पर बल दिया जाता हैं।''[३५] संक्षेप में कहा जाए तो संपादकीय किसी समाचार पत्र की रीढ़ होता है, उस पत्र का संपादक अपने पत्र में छपे समाचारों की अपने दृष्टिकोण से व्याख्या करता है, जिसमें संपादक के मत पर ही अधिक बल दिया जाता है ।

विलियम एम. रिवर्स की मान्यता है कि ''संपादकीय, समीक्षा तथा अन्य विचार लेखों से फीचर अलग होता है। फीचर लेखक तथ्यों को तौलता हैं, उनके आधार पर वकालत नही करता। वह पाठक को फुसलाता नहीं, पर उसके ज्ञान की वृद्धि करता है।''[३६] इस मान्यता के आधार पर स्पष्ट होता है कि ''संपादकीय में लेखक के विचार और मत पर विशेष जोर होता है। फीचर इससे विपरीत होते हैं। फीचर लेखक फीचर में अपने विचारों को प्रत्यक्ष रूप से पाठकों पर थोंपता नहीं, बल्कि निर्णय पाठकों पर सोंपता है । शायद इसलिए यह कहा जाता है कि संपादकीय 'लोकनेता' है तो फीचर 'जनसेवक' ।''[३७]

**२.६.३ रिपोर्ताज और फीचर :**

''रिपोर्ट किसी घटना की यथा-तथ्य सूचना होती है । सूचना देने अथवा संवाद भेजने के कार्य को 'रिपोर्टिंग' कहा जाता है । पत्रकारों की इस 'रिपोर्टिंग' ने ही 'रिपोर्ताज' विधा को जन्म दिया 'रिपोर्ताज'एक ऐसी विधा है जिसमें किसी घटना का अत्यंत सूक्ष्म और हृदयग्राही विवरण इस प्रकार दिया जाता है कि पाठक की आँखों के समक्ष घटना चित्रपट के चित्र की भाँति सजीव हो उठे ।''[३८]

'रिपोर्ताज' में समाचारपत्र की यथातथ्यता तो रहती है लेकिन वह 'रिपोर्ट' से किंचित भिन्नता रखता है । रिपोर्ट में घटना का यथासंभव तथ्यात्मक वर्णन प्रस्तुत किया जाता है । उसमें तटस्थता,शुष्क तथ्य और उस तथ्य की कलात्मक पृष्ठभूमि निहित रहती है लेकिन इसमें साहित्यिकता का अभाव होता है । रिपोर्ताज में भावात्मकता, सजीवता, मार्मिकता, सरसता एवं रोचकता का सन्निवेश रहता हैं । रिपोर्ताज का लेखक घटना से रिपोर्टर की भांति निर्वैयक्तिक नही रह सकता बल्कि हृदय से उस घटना या दृश्य से जुड़ा होता है । इसका आकार भी 'रिपोर्ट' से बड़ा होता है और अनेक विधाओं- निबंध, रेखाचित्र, यात्रावृत्त, कहानी आदि की विशेषताओं का इसमें समावेश रहता है ।

फीचर रिपोर्ताज के निकट की विधा लगती है । रिपोर्ताज के अधिकांश गुण फीचर से

मिलते-जुलते हैं । परंतु कुछ आधारभूत तत्त्व ऐसे हैं जो इन विधाओं को अलग कर देते हैं । रिपोर्ताज में कल्पना को कोई स्थान नहीं होता वह नितांत सत्य घटना को ही अपना वर्ण्य-विषय बनाकर चलता है । लेकिन फीचर में विषय को रोचक बनाने के लिए कल्पना का थोड़ा बहुत पुट रहता है । फीचर के लिए कोई जरूरी नहीं की उसका विषय कोई 'घटना' ही हो, वह सृष्टि के समस्त इकाईयों पर लिखा जा सकता है । रिपोर्ताज में विषय की सीमा होती है, सामान्य विषय पर रिपोर्ताज नहीं बनाए जाते । इन दोनों के संदर्भ में एक बात और उल्लेखनीय है, रिपोर्ताज के लिए आवश्यक होता है कि उसमें समसामयिकता हो, लेकिन फीचर के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं होती । फीचर और रिपोर्ताज आकार में भी एक दूसरे भिन्न होते हैं ।

**२.६.४ कमेण्ट्री और फीचर :**

"अंग्रेजी में 'कमेण्ट्री' शब्द का अर्थ 'टीका' या 'टिप्पणी' के रूप में लिया जाता है ।" [३९] आजकल 'कमेण्ट्री' शब्द आकाशवाणी अथवा दूरदर्शन पर वर्णन के साथ तत्सम्बन्धी सामयिक समीक्षा के रूप में प्रयोग किया जाता है । इसमें दृश्यगत तथ्यों का जैसे की वैसे प्रस्तुतीकरण किया जाता हैं । कमेण्ट्री में भावुकता को कोई स्थान नहीं होता और कमेण्ट्रीकर्ता को बड़े तटस्थ भाव से, भावुकताशून्य हृदय से अपनी टिप्पणी या समीक्षा करनी होती हैं । फीचर यहीं पर कमेण्ट्री से भिन्न होता है। वह तथ्यों पर आधारित होने पर भी उसमें भावुकता और शैली वक्रता निहित रहती हैं । इस संदर्भ में ब्रियन निकल्स का कहना है कि "फीचर का बांकपन उसमें निहित भावुकता और टीका में है । कमेण्ट्री में वर्णन और टीका हैं, पर भावुकता नहीं ।"[४०] श्री.प्रेमनाथ चतुर्वेदी की भी मान्यता है कि "कमेण्ट्री में भावुकता को स्थान देना उचित नहीं । फीचर में तथ्यों की व्याख्या और टीका के साथ भावुकता का विशेष पुट होना आवश्यक है ।"[४१] अत: कहा जा सकता है कि फीचर में तथ्यों का भावनात्मक संस्पर्श होता है, तो कमेण्ट्रीकर्ता को तटस्थ भाव से, भावुकताशून्य हृदय से अपनी टिप्पणी या समीक्षा करनी होती है ।

**२.६.५ कहानी और फीचर :**

कहानी यथार्थता पर आधारित होने के बावजूद भी कल्पना को केन्द्र में रखकर उसे तैयार किया जाता है, इसलिए कहानी को प्रमुखत: रंजनात्मकता के रूप में देखा जाता है, उसमें विश्वसनीयता संदिग्ध रहती है । फीचर कहानी से अधिक विश्वसनीय होता है क्योंकि वह चाहे किसी भी विषय पर लिखा गया हो, उसकी बुनावट तथ्यों के इर्द-गिर्द ही होती हैं । कहानी और फीचर में एक समानता यह है कि कहानी की ही भाँति एक कुशल लेखक फीचर में भी तथ्यों को इस तरह प्रस्तुत करता हैं कि उसमें कथारस अथवा गल्पतत्त्व का समावेश हो जाता है । अच्छे

फीचर को भी पाठक एक अच्छी कहानी की ही तरह तन्मय होकर आदि से अंत तक पढ़ने को उत्कंठित रहता है ।

**२.६.६ निबंध और फीचर :**

किसी विषय अथवा विचार से संबंधित सामग्री को बांधना या उसका निबन्धन करना ही निबंध कहलाता है । विशेष निजीपन और मौलिक विचारों के मिश्रण से ही निबंध पूर्ण होता हैं । निबंध में "मैं" की अभिव्यक्ति होती है अर्थात् निबंध के माध्यम से लेखक का व्यक्तित्त्व प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त होता है । लगभग सभी विचारकों ने लेखक के व्यक्तित्त्व अर्थात् स्वजीवन, विशेष निजीपन पर स्पष्ट जोर दिया है । उनके वक्तव्य से यह भी स्पष्ट है कि विशेष निजीपन किसी भी निबंध का प्राण है । अपने अनुभवों को आधार बनाकर तर्कपूर्ण तथा प्रामाणिक तरीके से प्रस्तुतीकरण ही निबंध को जन्म देता है । विदेशी समीक्षक हड़सन ने कहा है "सही निबंध वही है जिसमें वैयक्तिकता मूलरूप से विद्यमान हो । वास्तव में समाज प्रेरित अपनी निजी अनुभूतियों, भावनाओं और विचारों की प्रस्तुति ही निबंध है ।"[४२]

निबंध और फीचर में अंतर करते हुए कहा जा सकता है कि निबंध में जहाँ अपने विषय के प्रतिपादन के लिए पर्याप्त ज्ञानवर्द्धक सामग्री, विस्तृत विवेचन और लेखन शैली में गांभीर्य का संस्पर्श अनिवार्य होता है, वहीं फीचर में भाषा का लालित्य और आकर्षक एवं हृदयग्राही प्रस्तुति अनिवार्य शर्त है । फीचर की तुलना में निबंध और लेख की चारित्रिक विशेषताएँ और संरचना भिन्न हैं । वयोवृद्ध पत्रकार पंडित प्रेमनाथ चतुर्वेदी ने इस अन्तर को स्पष्ट करते हुए अपनी पुस्तक 'फीचर लेखन' में अनेक लेखकों के मत उद्धृत किए हैं । कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी विद्यापीठ के हिंदी प्राध्यापक डॉ. गोविंद रजनीश का मत उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा है कि "निबंध गद्य में अभिव्यक्ति की ऐसी सिद्धि और ऐसा कलात्मक संप्रेषण है, जिसमें लेखक अपने जीवनानुभवों और उपलब्धियों को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि पाठक उसी भावभूमि पर संचरण करने लगता है ।" [४३]

**२.६.७ लेख और फीचर :**

लेख शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के 'आर्टीकल' के रूप में होता है । यह शब्द पत्रकारिता के विकास से जुड़ा है । लेख में प्रमुखत: निर्वैयक्तिक ढंग से किसी विषय का विवेचन होता है । पत्रकारिता के क्षेत्र में लेख और फीचर दोनों लोकप्रिय विधाएँ हैं । दोनों विधाएँ इस क्षेत्र में अपना समान महत्त्व रखती हैं । लेकिन इन दोनों को एक ही श्रेणी में रखना अनुचित होगा । यह जरूर कहा जा सकता है कि फीचर और लेख में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो दोनों विधाओं में

समानता को स्थापित करती हैं तथा कुछ ऐसी भी बातें हैं जो दोनों को अलग कर देती हैं । कई बार फीचर लेख का रूप धारण कर लेता है तो लेख भी फीचर के लक्षण को अपने में समाहित किए रहता है । इन दोनों में निम्नलिखित अंतर दिखाई देता है-

लेख का विषय-विवेचन विस्तृत और गहन रूप से होता है । इसका लेखन करते समय लेखक को विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन करना पड़ता हैं । इसके साथ ही संबंधित विषय के विभिन्न तथ्यों, तारिखों, आंकड़ों तथा पूर्वपीठिका में दी जानेवाली सामग्री की आधार रूप में सहायता लेनी पड़ती है । लेकिन एखाद विषय पर फीचर लिखते समय लेखक को अपने आँख, कान, भावनाओं, अनुभूतियों, मनोवेगों और अन्वेषणों का सहारा लेना पड़ता हैं ।

लेख गंभीर और नीरस भाषा शैली में लिखे जाने के बावजूद भी अपने महत्त्व को बनाये रखता है । फीचर निर्माण में यह ढंग अत्यधिक घातक होता है । फीचर मनोरंजक, अनौपचारिक एवं घुल- मिलकर की जानेवाली बातचीत की शैली में लिखा जाता है, जिससे वह पाठकों को आकर्षित कर सके तथा अपने महत्त्व को बनाये रखे ।

लेख में सामान्यत: किसी समस्या विशेष या उसके अन्य किसी पहलू का सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन होता है । पांडित्यपूर्ण शैली इसके लिए उपयुक्त मानी जाती है किंतु फीचर में विषय के अधिक गहराई में जाना अनुपयुक्त समझा जाता है। इसमें कुछ शब्दों के द्वारा ही विशेष प्रभाव उत्पन्न किया जाता है । स्पष्ट है कि लेख की अपेक्षा फीचर का आकार अत्यधिक छोटा होता है लेकिन उसका प्रभाव लेख से अधिक होता है ।

लेख में बौद्धिकता की प्रधानता होती है, तो फीचर में बौद्धिकता के स्थान पर हृदय पक्ष को विशेष महत्त्व दिया जाता है । लेख में अधिक चित्र, व्यंग्य चित्र की आवश्यकता नहीं होती, पर चित्र और कार्टून फीचर के आवश्यक अंग हैं। अनेक फीचर चित्र प्रधान होते है । फीचर में सजावट और नाटकीयता का होना आवश्यक समझा जाता है ।

लेख में लेखक का 'मैं' कहीं न कहीं झलकता है, वह इसमें अपनी राय प्रत्यक्ष रूप में रख सकता है, लेकिन फीचर अधिकतम रूप से निर्वैयक्तिक होते हैं तथा इसमें लेखक पाठकों को ही विचार करने के लिए बाध्य करता है, स्वयं उसमें समाविष्ट नहीं होता ।

इस प्रकार हम दोनों विधाओं में अंतर करके देख सकते हैं । दोनों की अपनी -अपनी महत्ता है तथा दोनों का पत्रकारिता में अपना स्वतंत्र अस्तित्त्व है । डॉ. पी. डी. टंडण के शब्दों में कह सकते हैं कि "लेख जहाँ तक मंजिला और बहुकक्षीय भवन के समान है वहीं फीचर एक स्वच्छ, एक कक्षीय कुटीर के समान हैं ।"[४४] लेकिन कुछ लोग लेख की अपेक्षा फीचर पढ़ने को

ही प्राथमिकता देते हैं । राय पौल नैल्सन तो यहाँ तक कहते हैं कि "अनेक व्यक्ति लेख को फीचर से श्रेष्ठ मानते हैं, पर असल बात यह है कि अच्छे फीचर के सामने लेख बचकाना जान पडता है ।"[४५] बहुत से लोग इस मान्यता से सहमत हो सकते हैं, क्योंकि फीचर में मानवीय अभिरुचि के विषयों की गहराई युक्त सहज, सरल एवं दृश्यमूलक अभिव्यक्ति पूरे प्रभाव के साथ की जाती है । विविध प्रकार के छायाचित्र तथा व्यंग्यचित्र इस विधा को और भी जीवन्त बना देते हैं ।

उपर्युक्त सभी विधाओं का फीचर के साथ संबंध और अंतर देखने पर कहा जा सकता है कि अधिकांश विधाओं के गुण एवं विशेषताएँ फीचर से मिलती-जुलती हैं । केवल इसी आधार पर फीचर को अपने स्वतंत्र विधागत अस्तित्त्व से हटकर इन विधाओं में सम्मिलित नहीं किया जा सकता । फीचर आज की पत्रकारिता का प्रमुख अंग बन चुका है, उसने अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है; जिसकी अपनी प्रकृति है, अपना व्यवहार है, अपनी शैली है उसे न्यूनाधिक रूप में समकक्ष मानकर किसी विधा विशेष का अंगीकृत रूप नहीं माना जा सकता । हाँ, यह अवश्य है कि लेखन की इन विधाओं की झलक फीचर में यथाप्रसंग आ सकती है। ऐसा करने से फीचर अधिक रोचक और प्रभावी बन जाता है । पर फीचर में इनका प्रयोग बहुत ही कम मात्रा में और प्रतिपादित विषय को अधिक खिलाने के साधन के रूप में होना चाहिए । अत: फीचर विधा को किसी अन्य विधा की चौखट में न बिठाकर उसका अध्ययन एक स्वतंत्र विधा के रूप में ही करना श्रेयस्कर होगा ।

**२.७ फीचर के प्रकार :**

आज प्रिंट मीडिया, दृश्य-श्राव्य माध्यम तथा आकाशवाणी इन तीनों माध्यमों में फीचर विधा तेजी से लोकप्रिय हो रही है । पाठकों का रूझान भी इस विधा की ओर दिनोंदिन बढ़ ही रहा है । मूलत: फीचर यह समाचारों की दुनिया की विधा है इसलिए इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक है । वह सुई से लेकर चंद्र यात्रा तक, परमाणु से लेकर पहाड़ तक किसी भी विषय और घटना को केन्द्र में रखकर लिखा जा सकता है । इस संदर्भ में विवेकीराय कहते हैं कि "फीचर का वृत्त इतना विशाल है जीवन की ही भाँति वह इतना व्यापक है कि उसमें समस्त विषयों का समावेश हो जाता हैं और वे सहज ही पृष्ठभूमि बन जाते हैं । शर्त केवल उन्हें समसामयिक संदर्भ में देखने की होती है ।"[४६] सही मायने में अगर हम अपने आसपास के परिवेश को ध्यान से देखें तो उसमें इतने सारे विषय बिखरे पड़े हैं, जिनसे एक व्यक्ति रोज नया फीचर तैयार कर सकता है । बस आवश्यकता होती है, पत्रकार के सूक्ष्म दृष्टि की, घटना को पकड़ने की, कुछ नया करने के ललक

की, पाठकों को विविधता देने की तथा चौकन्ना रहने की ।

फीचर के कितने प्रकार हो सकते हैं इसके बारे में कोई अनुमान नहीं है । सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, पौराणिक, पर्यावरण, खेल, मनोरंजन आदि विभिन्न विषयों पर श्रेष्ठ फीचर लिखे गए हैं । "के. पी. नारायण ने तीन प्रमुख भेदों का विवेचन किया हैं- व्यक्तित्त्व फीचर, त्यौहार विषयक फीचर, चित्रात्मक फीचर ।"[४७] प्रेमनाथ चतुर्वेदी ने फीचर के दो प्रमुख भेद किए हैं- "समाचार प्रधान और विशिष्ट ।"[४८] तथा इन्हीं दो भेदों में समस्त प्रकारों को समाहित किया हैं। व्यावहारिक दृष्टि से फीचर के अनेकानेक भेद किए जा सकते हैं । यहाँ पर हम ऐसे ही कुछ फीचर के प्रकारों का स्वरूपात्मक विवेचन देने जा रहे हैं-

**२.७.१ समाचार फीचर :**

जो फीचर सीधे समाचारों से जुड़े हो ऐसे फीचर्स को 'समाचार फीचर' कहा जाता है । समाचार और फीचर दोनों में भी घटित घटना का विवरण किया जाता है, परंतु दोनों की प्रस्तुतीकरण शैली में अंतर है । जहाँ समाचारों में संपूर्ण घटना का यथातथ्य विवरण दिया जाता है वहीं समाचार फीचर में लेखक किसी घटना के घटित हो जाने पर उसके किसी महत्त्वपूर्ण अंग पर अपना ध्यान केन्द्रित करके उसे इस प्रकार विस्तार देता है कि वह समाचार मात्र न रहकर नया कथात्मक रूप धारण कर लेता है।

दोनों का मूल उद्देश्य समाचार के केन्द्रीय भाव को अभिव्यक्त करना ही है । समाचारों में छः ककारों का उल्लेख अनिवार्य है परंतु समाचार फीचर में किसी भी घटित हो चुकी घटना से उत्पन्न परिवेश में से किसी रोचक समाचार को ग्रहण करके मनोरंजनपूर्ण शैली में फीचर की रचना की जाती है । समाचार फीचर लेखक फीचर की रचना करते समय हमेशा यह याद रखता है कि उसका उद्देश्य समाचार को अभिव्यक्त करना है, इसलिए वह केवल फीचर में रोचकता निर्माण करने के लिए आवश्यकतानुसार कल्पना, तथ्य आदि का समावेश करता हैं ।

समाचार फीचर का महत्त्व और मूल्य समाचारों के जैसा समय पर आधारित नहीं होता। इस संदर्भ में विजय कुलश्रेष्ठ कहते हैं "समाचार में फीचर का मूल उद्देश्य मात्र नवीन समाचार तक ही सीमित नहीं होता अपितु उसके द्वारा फीचर लेखक नवीन तथ्य, विचार, प्रत्यय और कल्पना का संयोजन कर समाचार से सम्बद्ध विषयों और पहलुओं की व्याख्या या अधिक स्पष्टीकरण करता है । अतः वह सीमित समय मूल्य या समयानुकूल महत्त्व से आगे बढ़ जाता है ।"[४९] संक्षेप में कहा जा सकता है कि समाचार फीचर में लेखक फीचर में निहित कथा सूत्रों को रोचकतापूर्ण शैली में कथात्मक स्वरूप प्रदान करता है ।

### २.७.२ राजनीतिक फीचर :

आज के समय में प्रत्येक क्षेत्र में राजनीति हावी हो चुकी है । समाचारपत्रों में छपा कोई चर्चित राजनीतिक मुद्दा सभी प्रकार के पाठकों द्वारा बड़े चाव से पढ़ा जाता है । यही कारण है कि आज के विभिन्न छोटे-बड़े समाचारपत्रों में राजनीति पर रोचक फीचर लिखे जाने लगे हैं । इस श्रेणी के फीचर में राजनीति के विभिन्न पहलुओं पर फीचर लिखे जाते हैं । जिसमें प्रमुखत: सभी राजनीतिक पार्टियाँ, संगठन, उसके क्रिया-कलाप, संसद, संसदीय कार्य व्यवहार, सरकार निर्णय, बहस, राजनीतिज्ञ, विश्व राजनीतिक क्रिया-कलाप, विभिन्न देशों के साथ संबंध, चुनाव, हार-जीत आदि विषय सम्मिलित हैं । इस क्षेत्र के कई लेखक राजनीति से सम्बन्धित विविध बिन्दुओं पर गहन अध्ययन करते हैं, विभिन्न जगह से स्रोत सामग्री उपलब्ध कर उसका विश्लेषण करके फीचर लेखन करते हैं । इस प्रकार एक विशिष्ट भाग पर लेखक अपनी विशेषज्ञता बनाता है और उस पर अपने नवीन विचारों के साथ कलम चलाता है ।

वस्तुत राजनीतिक विचारों पर फीचर लिखने वाले केवल समाचार एवं घटनाओं की ही बाट में नहीं बैठे रहते, वे समय-समय पर राजनीति के विविध अनछुए विषयों को लेकर भी फीचर प्रस्तुत करते हैं । राजनीतिज्ञों द्वारा फैलाए गए भ्रष्टाचार, चुनावी तिकड़म, देशवाद, जातिवाद जैसे विषयों पर मूल्यसंगत फीचर खासकर आज कल की पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता के साथ छापे जा रहे हैं ।

### २.७.३ अर्थ, उद्योग एवं वाणिज्य संबंधी फीचर :

किसी भी राष्ट्र, समाज या संपूर्ण संसार की आर्थिक स्थिति के संबंध में लिखा गया फीचर ही आर्थिक फीचर कहलाता है । आर्थिक फीचर का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है, फिर भी 'इसे चार प्रमुख रूपों में बाँटकर लिखा जाता हैं, जिनमें आर्थिक विकास संबंधी फीचर, वाणिज्य एवं व्यापार संबंधी फीचर, बजट संबंधी फीचर, अन्य आर्थिक विचार संबंधी फीचर आदि प्रमुख भेद हैं ।''[५०] आज लगभग सभी समाचारपत्र -पत्रिकाओं में आर्थिक क्षेत्र से जुड़े विभिन्न पहलुओं को लेकर अर्थ विषयक फीचर लिखें जाते हैं । इनमें दैनिक बाजार भाव, बेरोज़गारी, निर्धनता, उद्योग की प्रगति-अवनति, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय उत्पादनों की जानकारी, बैंकिंग व्यवस्था, मुद्रा विनियम की स्थिति, बाजारों के उतार-चढ़ाव, कर प्रणाली, आयात-निर्यात, शेयर, बाण्ड, बीमा व्यवसाय, बजट आदि से सम्बन्धित फीचर बखूबी छापे जा रहे हैं ।

अर्थ विषयक फीचर का उद्देश्य केवल रंजन करना अथवा जानकारी भर देना नहीं होता बल्कि इसके उद्देश्यों में विविधता होती हैं, जिनमें प्रमुखत: आर्थिक गतिविधियों का परिचय देना,

अर्थ उद्योग एवं वाणिज्य के संदर्भ में लोगों की मानसिकता तैयार करना, निवेशकों को दिशा निर्देश देना, सरकारी योजनाओं की सूचना देना और समीक्षा करना आदि उद्देश्यों को लेकर फीचर लिखे जाते हैं । अर्थ, उद्योग एवं वाणिज्य संबंधी फीचर लेखन करने के लिए फीचर लेखक को आर्थिक, औद्योगिक एवं व्यावसायिक परिदृश्यों की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है । यदि वह इनकी विस्तृत और सूक्ष्म जानकारी नहीं रखता है तो वह पूर्ण विश्वास के साथ इस विषय पर फीचर लेखन नहीं कर सकता ।

**२.७.४ धार्मिक एवं दर्शन संबंधी फीचर :**

भारत में धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान मानी जाती है । इस प्रकार के फीचर में आत्मा, परमात्मा, ईश्वर भक्ति, लीला संत पुरूषों की जीवनी आदि का विवेचन किया जाता है । मनुष्य को सुखमय जीवन जीने के लिए सुख, शांति, प्रेम, सद्भावना, पवित्रता, नैतिकता आदि मानवीय मूल्यों की आवश्यकता होती हैं । इन्हीं मूल्यों की स्थापना के लिए धर्म एवं आध्यात्म से संबंधित फीचर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । "आज का उत्तर आधुनिक युग अपने गर्भ में आपाधापी और तनाव का जो बीज संजोए हुए है उसका स्थायी इलाज आध्यात्म के ही पास है । वस्तुत: आज मानव जीवन में जिस तरह अशान्ति घर करती जा रही है, हम जिस तरह दैनिक जीवन की एकरसता में अपनी स्वाभाविक हँसी-खुशी भूलते जा रहे हैं, ऐसी स्थिति में धर्म-दर्शन संबंधी फीचर एक राहत लेकर आते हैं । निराश लोगों का मनोबल बढ़ाते हैं और इस तरह अपनी सार्थकता तथा प्रासंगिकता सिद्ध करते हैं ।"[५१]

धर्म-दर्शन संबंधी फीचर का मूल उद्देश्य किसी धर्म या संप्रदाय का प्रचार-प्रसार करना कतई नहीं होता बल्कि ऐसे फीचर में अनिष्टकारी प्रथाओं की आलोचना की जाती हैं । सभी धर्मों के गौरवपूर्ण धार्मिक ग्रंथों पर आधारित प्रेरक कथाएँ इसमें दी जाती हैं, साथ ही ईश्वर भक्ति, भगवन्नाम, संकीर्तन का प्रचार, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, धर्म-प्रेम, सदाचरण की शिक्षा देने वाले रोचक और प्रेरक सूत्र संकेत होते हैं । अत: कहा जा सकता है कि धर्म एवं दर्शन संबंधी फीचर में अभिव्यक्त विचार मनुष्य को मात्र मन: शांति ही नहीं देते बल्कि उसे उचित दिशा देने का भी कार्य करते हैं । इस प्रकार के फीचर में दार्शनिकता और चिंतन का बड़ा महत्त्व रहता है ।

**२.७.५ इतिहास एवं पुरातत्त्व से संबंधित फीचर :**

मानव स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी रहा है । यही जिज्ञासा उसे अतीत की ऐतिहासिक घटनाओं को जानने के लिए प्रेरित करती हैं । ऐतिहासिक फीचर मानव की जिज्ञासा को तृप्त करते हैं । जहाँ एक ओर इतिहास एवं पुरातत्त्व से संबंधित फीचर हमारे देश के समृद्ध अतीत से नई

पीढ़ी को रूबरू कराते हैं वही दूसरी ओर प्राचीन इतिहास को नई दृष्टि से देखने का अवसर भी उपलब्ध कराते हैं ।फीचर लेखक अपने ऐतिहासिक फीचर में इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों, घटनाओं, स्मारकों का मानवी अभिरुचि के अनुकूल विवरणात्मक आलेखन संक्षिप्त आकार में प्रस्तुत करता है । नियतकालिकता, अद्‌वितीयता, प्राचीन इतिहास पर नूतन दृष्टि, लोकप्रिय विश्वासों का प्रतिपादन अथवा खण्डन, ऐतिहासिक व्यक्तियों के संबंध में परिबोध वृद्‌धि इसी अभिरुचि के आधारभूत कारण हैं ।

इतिहास एवं पुरातत्त्व से संबंधित विषय पर फीचर लिखना सहज कार्य नहीं है। इसके लिए लेखक के पास अनुसंधानात्मक दृष्टि एवं सूक्ष्म अध्ययन वृत्ति का होना अनिवार्य होता है। ऐसे फीचर में लेखक को पूरी सतर्कता के साथ प्रामाणिक तथ्यों का बारीकी से विश्लेषण करना होता है क्योंकि यह फीचर जन धारणाओं का निर्माण करने में सहायक होते हैं । दूसरी बात लेखक को सदैव स्मरण रखनी होती है कि फीचर में अत्यधिक तथ्यों के विश्लेषण से फीचर कहीं बोझिल न हो जाए और दूसरी ओर फीचर को रोचक बनाने की धुन में तथ्य एवं प्रमाण उपेक्षित न रह जाए । अत: तथ्यान्वेषण एवं प्रस्तुति शैली में अनिवार्य संतुलन का ध्यान फीचर लेखक को हमेशा रखना पड़ता है तभी उसका फीचर ऐतिहासिक कसौटी पर खरा उतरता है ।

**२.७.६ मानवीय रुचि विषयक फीचर :**

मनुष्य एक दूसरे के रंग-रूप में ही नहीं बल्कि भाव-भावनाओं, रुचि-अरुचियों के आधार पर भी भिन्न होता है । मनुष्य की मानसिक रचना के विविध पहलू, रुचि-अरुचि को ध्यान में रखकर ही इस प्रकार के फीचर लिखे जाते हैं । मानवीय रुचि विषयक फीचर को परिभाषित करते हुए विलियम रिक्स कहते हैं, "मानवीय रुचि के फीचर वे हैं जिनसे पाठक भावनात्मक रूप से जुड़ा हो और जो पाठक को उत्तेजित या हतोत्साहित करे, क्रोधित या प्रसन्न करे तथा उसमें सहानुभूति या अरुचि उत्पन्न करे ।"[५२] इस प्रकार के फीचर भावप्रधान होते हैं जो कारुणिक, मार्मिक तथा अनुभूतिपूर्ण हो सकते हैं ।

मानवीय रुचि विषयक फीचर का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है । इस प्रकार के फीचर में लेखक मनुष्य के रुचि-अरुचि का ध्यान रखते हुए फीचर लेखन के लिए किसी हृदयस्पर्शी विषय का चयन करता है जिसमें प्रेम, दैन्य, साहस, अपराध, स्वास्थ्य आदि से संबंधित फीचर विशेष लोकप्रिय होते हैं । इस प्रकार के फीचर में लेखक भय, घृणा, क्रोध, प्रेम, सहानुभूति तथा हास्य की स्थिति उत्पन्न कर पाठकों के संवेगों को सहज रूप से जागृत कर सकता हैं । इस संदर्भ में "प्रख्यात साहित्यकार रघुवीर सहाय ने महिलाओं, बच्चों और समाज के उपेक्षित वर्ग की पीड़ा

को आत्मसात करके मानवीय रुचि विषयक फीचर लेखन में जैसी महारत हासिल की है वास्तव में वह अद्‌वितीय है ।''[५३] अत: कहा जा सकता है कि मानवीय रुचि विषयक फीचर में लेखक अस्वाभाविक, विलक्षण एवं असाधारण विषयवस्तु का अन्वेषण करके फीचर लिखता है ।

**२.७.७ व्यक्तित्त्व संबंधी फीचर :**

इसे पार्श्वचित्र फीचर भी कहा जाता है । इस कोटि के फीचर में किसी व्यक्ति विशेष का चित्रांकन, रेखाचित्र की भाँति प्रस्तुत किया जाता है । इसमें लेखक वह व्यक्ति किस विशेष असाधारण प्रतिभा और कार्यों की वजह से समाज में पहचाना जाता है तथा प्रतिष्ठित हुआ है, इन सभी बातों पर प्रकाश डालता है ।

पत्र-पत्रिकाओं के आरंभिक काल में हमारे यहाँ फीचर के नायक महापुरूष हुआ करते थे, जो विशेष रूप से लोकप्रिय होते थे । ऐसे फीचर पाठक वर्ग को प्रेरणा देने के लिए लिखे जाते थे । आजकल की पत्र-पत्रिकाओं में इतिहास में प्रसिद्‌ध महत् जनों के बदले समाज में किसी भी प्रभावशाली व्यक्तित्त्व को केन्द्रित कर उसके प्रभाव आदि के मद्‌देनजर फीचर लिखने का चलन दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है । इसी प्रकार समाज के साधारण एवं उपेक्षित सामान्य चरित्रों पर भी इस प्रकार के फीचर लिखे जा रहे हैं । इस प्रकार का फीचर लेखन करते समय लेखक को यह सदैव याद रखना चाहिए कि जिस व्यक्ति के संदर्भ में वह फीचर लिख रहा है, उसके जीवन के अनछुए प्रसंगों को वह कथात्मक रूप प्रदान करे तथा उनके द्‌वारा किए गए महत्त्वपूर्ण कार्यों एवं उनकी सेवाओं का संकेत भी करे ।

**२.७.८ विज्ञान विषयक फीचर :**

विज्ञान से संबंधित समस्त जिज्ञासाओं की पूर्ति करने का कार्य विज्ञान विषयक फीचर करते हैं । इस श्रेणी के फीचर में नये-नये आविष्कारों तथा खोजों की बारीकियों एवं तकनीकी विवरणों पर बखूबी प्रकाश डाला जाता हैं । सामान्य पाठक के लिए विज्ञान जैसे तकनीकी एवं जटिल विषयों को तथा उसकी बारीकियों को समझना कठिन होता है, लेकिन कुशल लेखक जहाँ तक हो सके इस विषय को सहज, सुबोध एवं सुष्ठु शैली में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, जिससे फीचर अधिक लोकप्रिय होते हैं । इस संदर्भ में ब्रजभूषण सिंह आदर्श कहते हैं कि "विज्ञान जैसे तकनीकी विषय को गैर-तकनीकी ढंग से इस प्रकार लिखना पड़ता है कि साधारण पाठक उसमें रुचि ले और तथ्यों को भली-भाँति समझ सके ।''[५४] आज चिकित्सा, बॉयोटेक्नोलॉजी, संचार, कृषि, आयुध, अन्तरिक्ष, सामुद्रिक विज्ञान, पर्यावरण आदि विविध क्षेत्रों में नितनवीन खोजें हो रही हैं; जो पाठकों को आकर्षित कर रही हैं ।

विज्ञान फीचर के माध्यम से वैज्ञानिक चेतना का प्रसार होता है, जिससे लोगों की सोच पर भी असर पड़ता है । "विज्ञान विषयों पर लिखे जाने वाले फीचर केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही विकसित नहीं करते बल्कि इन फीचर्स से विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता के पहलू पर भी जनता का ध्यान जाता है ।"[५५]इसमें कोई संदेह नहीं है कि विज्ञानपरक फीचर अन्य प्रकार के फीचर लेखन से भिन्न प्रकृति और परम्परा का लेखन है । अन्य प्रकार के फीचर से जहाँ भावनायुक्त, संवेदनशीलता का महत्त्व स्वीकार किया जाता है, वहीं विज्ञानपरक फीचर लेखन में विषयगत गहराई, उपलब्ध तथ्य का परीक्षण और सत्य का आकलन करना फीचर लेखन का सर्वोपरि दायित्त्व बन जाता है ।

**२.७.९ खेलकूद फीचर :**

युवा पाठकों के लिए सर्वाधिक रुचि वाला पृष्ठ खेल संबंधी समाचार का होता है । अत: अपने पाठकों की अभिरुचि जानकर ही समाचार पत्र और पत्रिकाओं में खेल संबंधी फीचर लेखन का प्रचलन हुआ है । खेल फीचर के अंतर्गत खेल विशेष का पूर्वेतिहास, खेल सुधार विषयक विवरण आदि और भावी निर्देश रोचक शैली में प्रस्तुत किया जाता है । आज खेलों में विविधता आ रही है और उनका अधिकाधिक प्रचार-प्रसार होता जा रहा है त्यों-त्यों उनके बारे में ज्यादा से ज्यादा जान लेने की इच्छा का बलवती होना स्वाभाविक है । खासकर नयी पीढ़ी विविध खेलों एवं खेल संबंधी फीचर लेखों की ज्यादा दिवानी है ।

खेल संबंधी फीचर लेखन के लिए विशिष्ट कौशल के साथ भाषा पर अधिकार एवं अभिव्यंजना की सरलता अनिवार्य है । वैसे तो खेल संबंधी भाषा एक विशिष्ट तकनीकी भाषा होती है । संभव है ऐसी भाषा का प्रयोग फीचर को नीरस बना दे । इसलिए फीचर लेखक को फीचर में रोचकता की सृष्टि करने हेतु नई खेल शब्दावलियों और भाषा के नए मुहावरों के साथ-साथ खेल संबंधित तथ्यों की पूर्ण जानकारी होना आवश्यक हैं । इस संबंध में ब्रजभूषण सिंह आदर्श कहते हैं "खेलकूद समाचार की तकनीकी शब्दावली के कारण जो नीरसता दिखलाई देती है वह रूपक (फीचर) में लेखक की हार्दिकता के कारण नहीं रहती है । इसलिए आवश्यक है कि लेखक को संबंधित पूर्व इतिहास, कीर्तिमान, आयोजन का पूर्ण विवरण, नियमों का पूर्ण ज्ञान भलीभाँति हो ।"[५६] अत: खेल फीचर का मूल उद्देश्य लोगों में खेलकूद के प्रति रुचि एवं जागरूकता बढ़ाना तथा समाज में खेल भावना का विकास करना होता है ।

**२.७.१० पर्वोत्सवी फीचर :**

भारत विविध धर्म और संस्कृति वाला एक विशाल देश है । देश में बसने वाले विभिन्न

समूहों एवं संप्रदायों के अपने-अपने पर्व-त्यौहार हैं, जिनके पीछे एक सुदीर्घ सांस्कृतिक परंपरा रही है । दीपावली, दशहरा, छठ, रक्षाबन्धन, दुर्गापूजा, ईद, गुडफ्राइडे, ख्रिसमस, बुद्धपूर्णिमा, पर्युषण, बैसाखी आदि पर्वों पर ऐसे फीचर लिखे जाते हैं । ये फीचर्स हमें हमारी प्राचीन सभ्यता-संस्कृति से रू-बरू कराते हैं ।

"पर्व त्यौहार संबंधी फीचर लिखते समय इस बात की सावधानी रखनी चाहिए कि पर्वों की पारस्परिक महत्ता के उद्घाटन के साथ-साथ वर्तमान प्रचलन और रुचि वैविध्य का भी तर्कसंगत उल्लेख होता चले ।"[५७] भाषा प्रयोग भी अत्यंत सरल होना चाहिए । ऐसा नहीं कि वेद-पुराणों एवं धर्मग्रंथों के अधिकाधिक उद्धरणों से फीचर बोझिल हो जाए । अत: कहा जा सकता है कि अपनी इन गौरवशाली विरासतों को कहीं हम भूल न जाएँ । पर्व, त्यौहार, व्रत संबंधी फीचर इस संकेत के साथ हमारी चेतना को झकझोरते हैं और जीवन में घर करती जा रही एकरूपता को तोड़कर उत्साह भर देते हैं ।

**२.७.११ पर्यटन विषयक फीचर :**

मनुष्य पहले ग्रंथों को पढ़कर ही ज्ञानार्जन कर पाता था, परंतु यह ज्ञान कहीं कृत्रिम-सा जान पड़ता था । आज वह ज्ञानार्जन के लिए एक स्रोत पर निर्भर नहीं है । उसने पुस्तकी ज्ञान की सीमाओं से बाहर निकलकर पर्वत, गुफाओं,आकाश, पाताल, पृथ्वी का भ्रमण कर अपनी ज्ञान की प्यास शांत करने का प्रयास किया है। पर्यटन, ज्ञानार्जन और मनोरंजन दोनों का साधन हैं । मनुष्य को अनुभवाधारित ज्ञान के बारे में जानने की उत्कट इच्छा रहती है । पर्यटन वृत्तान्त उसकी इसी वृत्ति की संतुष्टि करते हैं । इस प्रकार के फीचर में लेखक स्थान विशेष के दर्शनीय स्थलों, वहाँ के लोगों और उनके रहन-सहन के संदर्भ में आवश्यक एवं विशिष्ट जानकारी मनोरंजक रूप से प्रस्तुत कर पाठक के ज्ञान को बढ़ाता है । इस प्रकार के फीचर आकार में बड़े होते हैं । "सीमित आकार में यात्रावृत्त का प्रस्तुतीकरण लेखन कुशलता पर निर्भर करता है । यही कारण है कि यात्रा वृत्तांत फीचर की अपेक्षा लेख के लिए अधिक उपयुक्त होते हैं । फिर भी हिंदी में यात्रा फीचर का अभाव नहीं है ।"[५८]

**२.७.१२ चित्रात्मक फीचर :**

छायाचित्रों या फोटों के साथ सजाकर प्रस्तुत किए जानेवाला फीचर फोटो फीचर कहलाता है । ऐसे फीचर में फोटो या छायाचित्र फीचर की समस्या, घटना या वृत्तान्त के साथ गहरा संबंध रखते हैं, तभी वे पाठक एवं दर्शक को आकर्षित ही नहीं करते बल्कि उसके मन और मस्तिष्क को भी प्रभावित करने में सफल रहते हैं । सामान्यत: कहा जाता है कि फोटो फीचर में

चित्र ही अपनी बात कहते हैं । शब्दों की आवश्यकता काफी कम पड़ती हैं । इस संदर्भ में एक चीनी लोकोक्ति है "दस हजार शब्दों वाले लम्बे चौड़े विवरणों की अपेक्षा एक अच्छा चित्र अधिक प्रभावकारी होता है ।"[५९] फोटो फीचर पाठकों की समझ बढ़ाने में अपनी भागीदारी पूरी तरह निभाने में सफल है ।

फोटो फीचर के विषय चयन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है । दैनिक जीवन की समस्याओं, कठिनाइयों और पीड़ा मानव की स्थितियों के साथ-साथ विभिन्न घटनाओं एवं बाढ़, सूखा, दुर्घटना आदि पर सचित्र फीचर तैयार किए जा सकते हैं । अत: कहा जा सकता है कि सुंदर, आकर्षक, प्रामाणिक एवं कलात्मक फोटो न केवल पत्र-पत्रिकाओं में छपनेवाले समाचारों तथा फीचर्स को विश्वसनीय एवं प्रामाणिक बनाते हैं बल्कि पत्र-पत्रिकाओं को आकर्षक एवं रुचिकर बनाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते है ।

**२.७.१३ रेडियो फीचर:**

रेडियो द्वारा श्रोताओं को जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार किया गया फीचर ही रेडियो फीचर कहलाता है । रेडियो फीचर में कल्पनाशीलता, वास्तविक घटनाक्रम, घटना का विवरण एवं विवेचन, संबंधित लोगों के विचार, सूचनापरकता, रोचकता तथा आकर्षण व्याप्त रहता हैं । रेडियो फीचर का क्षेत्र अत्यंत व्यापक होता है । इसके माध्यम से महापुरूषों की जीवनी, किसी क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक जीवन-झाँकी, ऐतिहासिक स्थानों का परिचय आदि दिया जा सकता है ।

**२.७.१४ टेलीविजन फीचर :**

टेलीविजन फीचर को समाचार पत्र, रेडियो और फिल्म इन तीनों का सम्मिलित रूप कहा जा सकता हैं । क्योंकि टेलीविजन में रेडियो की आवाज, फिल्म के कैमरे की दृष्टि और अखबारों जैसे समाचारों को प्रेषित करने का अद्भूत संगम है। टेलीविजन फीचर में इन तीनों विधाओं का विशिष्ट गुण विद्यमान होता है । इसमें वास्तविक घटनाओं का रचनात्मक प्रस्तुतीकरण होता हैं । इसके प्रमुख तत्त्व आलेख, ध्वनि, कैमरा और संपादन होते हैं । टेलीविजन फीचर से संबंधित अधिक विश्लेषण स्वतंत्र अध्याय में किया जाएगा ।

उपरोक्त फीचर के प्रकारों के अतिरिक्त भी व्याख्यात्मक फीचर, साक्षात्कार फीचर, कृषि संबंधी फीचर, स्वास्थ्य विषयक फीचर, फैशन विषयक फीचर, व्यंग्यात्मक फीचर, सामाजिक फीचर, मौसम विषयक फीचर, चिकित्सा फीचर, ज्योतिष फीचर, सिनेमा फीचर आदि प्रकारों में फीचर को वर्गीकृत किया जाता हैं । आगे स्वतंत्र अध्याय में प्रातिनिधिक रूप में फीचर्स का

सोदाहरण विवेचन किया जाएगा ।

**२.८ फीचर लेखन के नियम :**

अच्छे फीचर का लेखन उस पत्र-पत्रिका की प्रसिद्धि के लिए एवं पाठकों को आकर्षित करने के लिए अत्यावश्यक होता है । एक अच्छा फीचर लेखक मोटे तौर पर समाचार आधारित या गैर-समाचार आधारित घटना पर तथा विशेष व्यक्ति के जन्म-मृत्यु पर, ऐतिहासिक संदर्भ या समसामयिक स्थिति पर आधारित फीचर लिखकर ना केवल पर्याप्त पैसा आर्जित करता है बल्कि वहीं पाठकों के दिलो दिमाग पर छाकर काफी शोहरत भी प्राप्त करता है ।

फीचर लेखन में लेखक को कुछ बुनियादी बातों का तथा कतिपय तकनीकी नियमों का भी ध्यान रखना पड़ता हैं । यह बातें ही फीचर को सुंदर और जीवन्त बनाती हैं । इस संदर्भ में डॉ. एस.सी भट्ट कहते हैं "पत्रकारिता की तकनीक का पालन करनेवाला व्यक्ति जिस प्रकार के लेखन के द्वारा अपने आपको अभिव्यक्त करता है उसे फीचर कहा जाता है । एक सफल फीचर लेखक उसी को कहा जाता है जो अपने फीचर में विषयवस्तु के घटनाक्रम का चयन सोच समझकर करता है और प्रभावी प्रस्तुतीकरण का ज्ञान भी उसके पास होता है । यहाँ हम कुछ ऐसे बिन्दुओं को रखने जा रहे हैं जो फीचर को अधिक प्रभावशाली, रोचक और संवेदनशील बनाने में मदद करते है; जिससे एक उत्कृष्ट फीचर की निर्मिति होती है।

१) फीचर लेखक को विषय, संदर्भ, स्थिति एवं विवरण आदि की तथ्यात्मकता, विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए । तिथि, सन्, धारा, संख्या, नामादि के संदर्भ में पूरी सावधानी से प्रमाण जुटाते हुए ही फीचर लिखना चाहिए ।

२) फीचर लेखक को निश्चितता और उपयुक्तता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। एक ही बात को बार- बार दोहराना फीचर की उपयोगिता को नष्ट करने के बराबर होता है । किसी भी तथ्य को घुमा- फिराकर नहीं कहना चाहिए । कहने और लिखने की शैली सरल और सहज होनी आवश्यक है । लेखक को प्रारंभ से अंत तक अपनी विषय की सीमा के अंदर रहना चाहिए, विषय को छोड़कर भटकना नहीं चाहिए । ऐसा करने पर फीचर का धारा प्रवाह समाप्त हो जाता है, उसकी क्रमबद्धता नष्ट हो जाती है ।

३) फीचर का विषय रुचिकर और लोकमानस को छूनेवाला होना चाहिए ।

४) जहाँ तक फीचर के आकर्षण का प्रश्न है वह बहुमुखी हो, न की अतिसीमित। आकर्षण का आधार एकांगी होने से पाठकों की संख्या सीमित होगी और वह उन्हे कम रोचक लगेगा ।

५) बड़े या प्रतिष्ठित व्यक्तियों, संस्थानों तथा मुद्दों आदि पर फीचर तैयार करते समय तथ्यों का पहले ही आकलन एवं परीक्षण कर लेना चाहिए ।

६) एक फीचर का चुनाव करते समय संबंधित उदाहरणों उद्धरणों, व्यक्तियों एवं विचारों की रूपरेखा अपने दिमाग में बनाना तथा जरूरी बातें लिख लेना ज्यादा अच्छा रहता हैं।

७) फीचर में किसी की आलोचना करने से बचना चाहिए तथा ऐसे फीचर का चुनाव-कम से कम करना चाहिए जो विवादास्पद है ।

८) फीचर विषय के अनुरूप शिक्षाप्रद होना चाहिए ।

९) फीचर लेखक को किसी भी फीचर में स्वयं को पूर्णत: तटस्थ तथा निष्पक्ष रखना चाहिए। फीचर लेखक का दायित्त्व घटना या स्थिति का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत करना ही नहीं होता बल्कि उसे किसी भी विवरण में अपनी दृष्टि को संतुलित, पक्षपात रहित, पूर्वग्रह से मुक्त तथा तटस्थ भी रखना होता हैं ।

१०) फीचर लेखक का कार्य विश्लेषण-विवेचन करते हुए वास्तविकता को यथातथ्य रूप में प्रस्तुत कर देना होता है । क्या है, यह बताना ही उसका कार्य है, न कि क्या होना चाहिए। निर्णय देने से लेखक के निहित स्वार्थ अथवा लाभ का संदेह होने लगता हैं। अत: उसे निर्णय की स्थापना करने से बचना चाहिए ।

११) फीचर की गरिमा इसी में है कि वह बिना किसी छींटाकशी और आरोप-प्रत्यारोप के अपनी बात को इस प्रकार स्पष्ट कर दे कि पाठक वर्ग सहज ही उद्देश्य को समझ ले।

१२) फीचर की भाषा सहज एवं संप्रेषणीय होनी चाहिए । रोचकता एवं लोकप्रियता के लिए दैनिक प्रचलन की शिष्ट भाषा एवं आदर्श भाषा का ही चयन लेखक की बुद्धिमात्र का परिचायक बनता है ।

१३) फीचर लेखन की शैली रोचक, आकर्षक, कौतुहल भरी तो होनी ही चाहिए किन्तु सभ्य और शिष्ट भी अवश्य होनी चाहिए ।

इसके अतिरिक्त भी ऐसी कई बाते हैं जो फीचर लिखते समय याद रखनी चाहिए । जैसे फीचर लेखक को विषय प्रस्तुति में बिखराव से बचना चाहिए। यथास्थान सुंदर उद्धरणों, लोकोक्तियों एवं मुहावरों का भी प्रयोग करना चाहिए यथावश्यक हास्य रस का पुट देकर भी फीचर में विनोद- वृत्ति का समावेश किया जा सकता है । फीचर लेखन का विषय न केवल महत्त्वपूर्ण विषयों एवं व्यक्तियों को बनाना चाहिए बल्कि दबे कुचले पीड़ित एवं उपेक्षित

लोगों को भी बनाना चाहिए। आम पाठक ऐसे विषयों को ज्यादा पसंद करते हैं यदि इन सभी बातों का सतर्कता से पालन फीचर लेखक के द्वारा होता है तो उसका फीचर सर्वोत्कृष्ट होगा । सतर्कता यह फीचर लेखन का महत्त्वपूर्ण नियम है । इस संदर्भ में डॉ. रामचंद्र तिवारी का कहना सही है " फीचर लिखने के लिए लेखक अपने आँख, कान, भावों, अनुभूतियों, मनोवेगों और अन्वेषण का सहारा लेकर फीचर को मजेदार, दिलचस्प और दिल पकड़ बनाता हैं ।"[६०]

**२.९ फीचर की भाषा- शैली एवं प्रस्तुति :**

फीचर लेखन शब्दों का ऐसा व्यवस्थित जाल है, जो लोगों को तथ्यपरक एवं रोचक सत्यता के सम्मिश्रण के साथ घटना की विस्तृत जानकारी प्रदान करता है । फीचर लेखक को भाषा संबंधी नियमों तथा शब्द कोश का विशेष रूप से ज्ञान होना आवश्यक हैं । फीचर लेखन के लिए वास्तव में ज्ञान, कौशल, लगन एवं सही समझ का होना बेहद जरूरी हैं । भाषा प्रयोग संबंधी और भी ऐसी बुनियादी बातें हैं जो फीचर लेखक को ज्ञात होना आवश्यक हैं जैसे-

* फीचर में आम जनता को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग होना चाहिए अर्थात् सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त अच्छे एवं सटीक शब्दों से भी फीचर आकर्षित करता है ।
* फीचर लेखक को हमेशा व्याकरणावलम्बित तथा शिष्टजन स्वीकृत भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए । हर फीचर में प्रयुक्त शब्दों में सामाजिक शील तथा कहने के ढंग में कोमलता होनी चाहिए ।
* द्विअर्थी संवादों एवं उलझनपूर्ण भाषा का प्रयोग फीचर में नहीं करना चाहिए। फीचर की गुणवत्ता को बरकरार रखने के लिए भाषा की स्पष्टता बेहद जरूरी है ।
* फीचर में कलात्मक भाषा के द्वारा पाठकों के मन-हृदय में रमणीयता जगाई जा सकती है, पर लेखक को यह सतर्कता रखनी पड़ती है कि फीचर में कलात्मकता एवं रमणीयता सृष्टि की कोशिश में उसका फीचर कहीं दुर्बोध न हो जाए ।
* भाषा का प्रयोग भावनाओं को स्पष्ट एवं प्रदर्शित करनेवाला होना चाहिए । एक अच्छा फीचर वही है जो हँसी के शब्दों पर हँसने के लिए मजबूर कर दे और करूणामयी शब्दों के द्वारा आँखो मे आँसू लाए ।
* शब्दों का प्रयोग चुने हुए शीर्षक, घटना एवं तथ्यों को समझने की दृष्टि से किया जाना चाहिए । अनावश्यक शब्दों को फीचर में कोई स्थान नहीं होना चाहिए ।
* फीचर मे अश्लील भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए और ना ही ऐसी भाषा के शब्दों

को प्रयुक्त करना चाहिए जिससे किसी की मानहानि होती हो, या किसी का निरादर होता हो ।

* मुहावरों, कहावतों, सूक्तियों एवं अन्य घटनाओं-कथाओं का उचित प्रयोग करना चाहिए।
* फीचर की भाषा को साहित्यिक रूप देने का प्रयास करने के बजाए व्यवहारोपयोगी भाषा पाठक एवं दर्शकों को अधिक भाती है ।

इस प्रकार फीचर लेखन में भाषा की महत्ता अनिवार्यत: है । भाषा के सही प्रयोग के बिना फीचर नीरस और अनाकर्षक हो जाता है । ऐसी स्थिति मे वह पाठक को प्रभावित नहीं कर पाता । शैथिल्य, नीरस और उबाऊ तथा ज्यादा अलंकृत, उपमा बहुल और गढ़ी हुई भाषा, फीचर के समग्र सौन्दर्य को विनष्ट कर देती है । इसलिए फीचर की भाषा स्वस्थ, मनोहारी, आकर्षक, सहज, सरल, सुन्दर तथा लुभावनी होनी चाहिए ।

**२.१० फीचर की शैलीगत विशेषताएँ :**

संतुलित एवं समग्र प्रभावी अभिव्यक्ति के लिए भाव एवं भाषा दोनों समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं । "भाव और भाषा के मिश्रित सौन्दर्य को ही शैली कहते है ।" [६१] किसी रचना में क्या कहा गया है? के साथ-साथ कैसे कहा गया है? अथवा कैसे प्रस्तुत किया गया है? इसका विशेष महत्त्व होता है । लेखन की उत्कृष्ट प्रस्तुति ही शैली होती है । 'लेखन कला' पुस्तक के लेखक आचार्य सीताराम चतुर्वेदी जी के अनुसार- "लेखन की अच्छी शैली वही है, जो लोक प्रयोगों से समन्वित हो, जो अपनी और अपने देश की जान पड़े, जिसमें शब्दों का प्रयोग शिष्ट और प्रभावोत्पादक हो, पाठक जिसे भली प्रकार समझ सकें ।"[६२] इस परिभाषा से स्पष्ट है कि फीचर लेखक को अपनी स्वतंत्र एवं मौलिक पहचान स्थापित करने के लिए अपनी शैली विकसित करने की जरूरत होती है । रचना की परिपूर्णता उत्कृष्ट शैली पर ही आधारित होती है । शैली की विशिष्टता के कारण ही फीचर महत्त्वपूर्ण बनता है । सरलता, स्पष्टता, व्यवहारिकता, व्याकरणानुरूपता, परिष्कार, भाव-विषयानुरूपता, प्रवाह, कला लाघव आदि शैली के आवश्यक गुण माने जाते हैं ।

प्रमुखत: शैली के दो भेद है-वर्णनात्मक और भावात्मक शैली । एक में वर्णनात्मक रूप से लेखन किया जाता है और दूसरे में भाव की प्रधानता होती है। इन दोनों शैलियों का मिश्रण भी हो सकता है । फीचर में मिश्रित शैली का प्रयोग ही अधिक उपयुक्त होता है । मिन्टो ने जहाँ शैली में सरलता, स्वच्छता, प्रभावोत्पादकता, मर्मस्पर्शिता, सुसंगति तथा श्रुति माधुर्य इन छह गुणों को आवश्यक बताया हैं वहीं कुछ विशेषज्ञों के मतानुसार विनोद तथा हास की विशेषता भी

शैली के गुण के रूप में समाहित है ।

फीचर की शैली मे व्यक्तित्त्व का प्रदर्शन नहीं बल्कि उसका गोपन होना चाहिए । विषय, प्रसंग, परिस्थिति और प्रकरण के अनुरूप ही फीचर लेखक शब्दों का चयन और वाक्यों का गठन करता हैं । के.पी.नारायणन फीचर की शैली के संदर्भ में कहते हैं "वह छोटी नदी के प्रवाह जैसी होनी चाहिए । फीचर के लिए भावात्मक शैली का प्रयोग अधिक उपयुक्त है ।"[६३] विषय और अवसर के अनुसार फीचर लेखक को वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, व्यंग्यात्मक, वक्तृत्त्वात्मक, संभावनात्मक आदि सभी शैलियों का प्रयोग करना चाहिए । वैसे तो आज व्यंग्यात्मक, चित्रात्मक, प्रसाद, समास, सूचनात्मक आदि अनेक शैलियाँ विकसित हुई हैं फिर भी प्रभावी फीचर लेखन के लिए यहाँ हम कुछ शैलियों का परिचय देने जा रहे हैं -

**२.१०.१ प्रसाद शैली :**

सरलता और सहजता प्रसाद शैली की विशेषता है । वाक्य की सरलता, भाषा की स्पष्टता, स्वाभाविकता और लोकप्रिय शब्दों का प्रयोग ही प्रसाद शैली है । इसमें फीचर लेखक बोधगम्यता को अधिक प्राथमिकता देता है । अपनी बात सबके लिए सहजग्राह्य, स्पष्ट और सरल हो, यही उसका लक्ष्य होता है । निपुण फीचर लेखक गंभीर और महत्त्वपूर्ण विषय पर भी पूरी स्वाभाविकता के साथ, सरल शब्दावली में अपने भाव-विचार अभिव्यक्त करता हैं । लचीलापन प्रसाद शैली की महत्त्वपूर्ण विशेषता है । अत: फीचर लेखन के लिए प्रचलित शैलियों में प्रसाद शैली सबसे ज्यादा प्रयुक्त और सर्वाधिक लोकप्रिय शैली मानी जाती है ।

**२.१०.२ सूचनात्मक शैली :**

ऐसी शैली जिसमें भाषा का प्रयोग सिर्फ सूचना देने के लिए किया जाता है, वह सूचना शैली है । इसमें फीचर लेखक पाठकों तक सूचना या जानकारी संप्रेषित करने के उद्देश्य से अत्यंत साधारण भाषा शैली का प्रयोग करता है । सूचना शैली के अंतर्गत अभिव्यंजना पद्धति में वैविध्य नहीं होता । सूचना या जानकारी को यथातथ्य सहज-संक्षिप्त और पठनीय भाषा में प्रकट कर देना ही इस शैली की सफलता है । आलकल कैरियर, स्वास्थ्य, सौन्दर्य, व्यापार आदि विषय से संबंधित फीचर अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं, जिसमें बिना किसी भूमिका के जरूरी सूचना और ज्ञान दिया जाता है ।

**२.१०.३ लोकशैली या जनशैली :**

जन-जीवन में घटित होनेवाली घटनाओं को आम जनता की सरल और सहज भाषा में

हू-ब-हू अंकित करने की विशेषता इस शैली की होती है। इस शैली में सरल वाक्य गठन, सहजता, आम-फहम में प्रचलित शब्दों का व्यावहारिक और संतुलित सौन्दर्य स्वाभाविक रूप से घुल-मिल कर आता है ।

**२.१०.४ व्यंग्यात्मक शैली :**

विवेचित विषय को यदि व्यंग्यात्मक शैली में या हास्य-व्यंग से भरपूर लिखा जाए तो वह अधिक सहज एवं प्रभावकारी सिद्ध होता है । परंतु इसके लिए उचित शब्दों का चयन जरूरी होता हैं ।

**२.१०.५ गतिशील शैली :**

फीचर के द्वारा लोगों की जिज्ञासा को बढ़ाने तथा शांत करने तक की स्थिति तक पहुँचने के लिए इस प्रकार की शैली का प्रयोग फीचर लेखन में किया जाता है ।

**२.१०.६ विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक शैली :**

किसी घटना की पूरी जानकारी देने तथा उस पर विचार जानने एवं प्रकट करने के उद्देश्य से तैयार किए गए फीचर्स में इस शैली का प्रयोग किया जाता है । उदा : चुनाव नतीजे जानने की दृष्टि से तैयार किया गया फीचर ।

अंत: कुछ विद्वानों का यह मानना है कि भले ही शैली के विविध प्रकारों की चर्चा की जाती है पर व्यावहारिक रूप में फीचर की कोई निश्चित शैली नहीं होती । फीचर लेखक प्रसंगानुकूल विभिन्न शैलियों का प्रयोग कर अपने फीचर को सहजग्राह्य एवं प्रभावी बना सकता है ।

**• निष्कर्ष :**

उपरोक्त विवेचन एवं फीचर का स्वरूपात्मक अध्ययन करने के उपरांत निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि फीचर केवल एक समाचार नहीं होता बल्कि वह समसामयिक घटना, स्थिति, विषय वस्तु एवं परिवेश के प्रति पाठकों की रुचि बढ़ाकर उनमें उत्सुकता की वृद्धि कर उन्हें घटना के विविध पहलुओं से अवगत कराता हैं । फीचर रोचक जानकारी देने के साथ-साथ हमारा मनोरंजन और ज्ञानवृद्धि भी करता है, जिससे हमारी जिज्ञासापूर्ति हो जाती है और हमारे विचारों को नई दिशा भी मिल जाती है । इसमें निहित सत्यता, रोचकता, भावनात्मकता, कल्पनात्मकता, उद्देश्यपूर्णता आदि गुण हमें इस विधा की ओर सहज ही आकर्षित करते हैं । इस विधा की इन्हीं विशेषताओं के कारण आज यह मीडिया की सबसे लोकप्रिय विधा के रूप

में स्थापित हो चुकी है ।

अपनी आकर्षकता के कारण पाठकों को मोहित करनेवाली यह विधा अब प्रिंट मीडिया के साथ-साथ रेडियो, दूरदर्शन और इंटरनेट पर भी छा गयी है । धीरे धीरे इस विधा के लेखन में रुचि लेने वालों की भी संख्या भी बढ़ रही है चूँकि फीचर लेखन के माध्यम से लेखकों को आर्थिक लाभ के साथ समाज में अपनी अलग छवि निर्माण करने का भी अवसर मिलता है । अंत: कहा जा सकता है कि आनेवाले दिनों में फीचर विधा का भविष्य अत्यंत उज्वल है ।

**संदर्भ संकेत :**


१. एन.सी.पंत, मीडिया लेखन के सिद्धांत, पृ-११०

२. संपा.अमरेन्द्र कुमार, हिंदी पत्रकारिता : एक परिदृश्य, पृ-४६

३. वही, पृ-४५

४. डॉ.राजकुमारी रानी, पत्रकारिता : विविध विधाएँ, पृ- १९६

५. एन.सी.पंत, मीडिया लेखन के सिद्धांत, पृ-११०

६. विजय कुलश्रेष्ठ, फीचर लेखन, पृ - १९

७. वही, पृ- १९

८. डॉ.राजकुमारी रानी, पत्रकारिता : विविध विधाएँ, पृ- १९३

९. वही, पृ-१९३

१०. वही, पृ-१९२

११. वही, पृ-१९२,१९३

१२. वही, पृ-१९२

१३. विजय कुलश्रेष्ठ, फीचर लेखन, पृ- २१

१४. रत्नेश्वर, फीचर टाइम्स, पृ- ०२

१५. पी.के.आर्य, फीचर लेखन, पृ- १७

१६. विजय कुलश्रेष्ठ, फीचर लेखन, पृ-२२

१७. डॉ.राजकुमारी रानी, पत्रकारिता : विविध विधाएँ, पृ- १९५

१८. प्रो.रमेश जैन, संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण, १३३

१९. डॉ.ब्रजभूषणसिंह आदर्श, रूपक लेखन, पृ-१४,१५

२०. एन.सी.पंत, मीडिया लेखन के सिद्धांत, पृ-११५

२१. डॉ.निशांत सिंह, पत्रकारिता की विभिन्न विधाएँ, पृ-१३८

२२. एन.सी.पंत, मीडिया लेखन के सिद्धांत, पृ-११३

२३. प्रो.रमेश जैन, संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण, १४४

२४. सुरेश कुमार, इन्टरनेट पत्रकारिता, पृ-८८

२५. वही, पृ-७८

२६. वही, पृ-७९

२७. वही, पृ-७९

२८. डॉ.हरिमोहन, समाचार, फीचर लेखन एवं संपादन कला, पृ-१०९

२९. ऋतु गोठी, मीडिया लेखन, पृ- १२१

३०. डॉ.राजकुमारी रानी, पत्रकारिता : विविध विधाएँ, पृ- २००

३१. वही, पृ-२००

३२. डॉ.विजय कुलश्रेष्ठ, फीचर लेखन, पृष्ठ- २७

३३. डॉ.राजकुमारी रानी, पत्रकारिता : विविध विधाएँ, पृ- १९८

३४. प्रो.रमेश जैन, संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण, पृ-१४६

३५. वही, पृ-१२९

३६. डॉ.विजय कुलश्रेष्ठ, फीचर लेखन, पृ-५७

३७. प्रो.रमेश जैन, संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण, पृ-१४८

३८. डॉ.चंद्रप्रकाश मिश्र, मीडिया लेखन: सिद्धांत और व्यवहार, पृ-२०४

३९. विजय कुलश्रेष्ठ, फीचर लेखन, पृ-३५

४०. प्रो.रमेश जैन, संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण, पृष्ठ १४७

४१. विजय कुलश्रेष्ठ, फीचर लेखन, पृ- ५७

४२. रत्नेश्वर, फीचर टाईम्स, पृष्ठ- ०५

४३. डॉ.मनोहर प्रभाकर, फीचर लेखन: स्वरूप और शिल्प, पृ- २१

४४. डॉ.राजकुमारी रानी, पत्रकारिता : विविध विधाएँ, पृ- २१६

४५. डॉ.हरिमोहन, समाचार, फीचर लेखन एवं संपादन कला, पृ-१२०

४६. वही, पृ- ११०

४७. प्रो.रमेश जैन, संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण, पृ-१४८

४८. वही, पृ- १४८

४९. विजय कुलश्रेष्ठ, फीचर लेखन, पृ-४४

५०. वही, पृ- १४९

५१. डॉ.पूरनचंद टंडण, डॉ.सुनील कुमार तिवारी, फीचर लेखन : सृष्टि और दृष्टि, पृ-१४३

५२. डॉ.संजीव भानावत, समाचार एवं फीचर लेखन, पृ-२३०

५३. डॉ.राजकुमारी रानी, पत्रकारिता : विविध विधाएँ, पृ- २०५

५४. डॉ.ब्रजभूषण सिंह आदर्श, रूपक लेखन, पृ- ६२

५५. डॉ.पूरनचंद टंडण, डॉ.सुनीलकुमार तिवारी, फीचर लेखन : सृष्टि और दृष्टि, पृ-१५३

५६. विजय कुलश्रेष्ठ, फीचर लेखन, पृ- ४८

५७. डॉ.पूरनचंद टंडण, डॉ.सुनील कुमार तिवारी, फीचर लेखन : सृष्टि और दृष्टि, पृ-१७८

५८. डॉ.ब्रजभूषण सिंह आदर्श, रूपक लेखन, पृ-५७

५९. डॉ.राजकुमारी रानी, पत्रकारिता : विविध विधाएँ, पृ- २०८

६०. डॉ.राजेन्द्र राही, आधुनिक रिपोर्टिंग, पृ- १८९

६१. रत्नेश्वर, फीचर टाईम्स, पृ-१३५

६२. प्रो.रमेश जैन, संपादन, पृष्ठ सज्जा और मुद्रण, पृ- १४१

६३. वही, पृ- १४२

---०००---